

एक हकीक़त

और

हज़रत जी

मौलाना मुहम्मद सअद साहब

दामत बरकातहुम

व

आलमी मर्कज़

मदरसा काशिफूल उलुम

बंगले वाली मस्जिद

बसती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया

नई देहली

मुहम्मद अब्दूर राफ़ूए ख़ान
इन्दौर

18 ज़िलहज्ज 1437 हिजरी

21 सितम्बर 2016

बिस्मिल्ला हिर्हमा निर्हीम

हज़रत जी मौलाना साअद साहब

दामत बराकातुहुम

अमीर जमाअत दअवत तबलीग

आलमी मरकज़ बंगला वाली मस्जिद

बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलिया नई देहली

पर

चंद पुराने यानी अहले गुजरात व दीगर

हज़रात कि तरफ़ से लगाए गए इल्ज़ामात

और उसकि

हकीकत

मुहम्मद अब्दुशशकूर खान
इंदौरी

18 जिल्हज्ज 1438 हि

21 सितंबर 2016

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अहले गुजरात व दीगर हज़रात कि तरफ़ से लगाए गए इल्ज़ामात और उस की हकीकत

- (1) पहला इलज़ाम ये लगाया जा रहा है कि मौजूदा निज़ाम नहजे इल्यासी से हटा हुआ है। इस को लेकर शूरा शूरा का शोर मचाया जा रहा है।
- (2) दूसरा इलज़ाम ये लगाया जा रहा है के दअवत तअलीम इस्तक़बाल / मस्जिद कि आबादी नहज इल्यासी से हटी हुई है।
- (3) तीसरा इलज़ाम ये लगाया जा रहा है मुन्तख़ब अहादीस नहजे इल्यासी से हटी हुई है।
- (4) चौथा इलज़ाम ये लगाया जा रहा है के घर कि तअलीम में सीखना सिखाना नहजे इल्यासी से हटा हुआ है।

नहजे इल्यासी की दुहाई देकर दअवत के काम में चलाई जा रही दो चार बातों को लेकर बिना दलील के आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफूल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया और हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम को बदनाम करने कि साज़िश के तहत ईल्ज़ाम तराशीयों की जा रही हैं। नहजे इल्यासी को दअवत के काम को पिछले दोनों अमीरों व अकाबरीन उम्मत के अमल व तहरीरों से इस की हकीकत को देखें व समझें।

- (1) पहला इलज़ाम ये लगाया जा रहा है कि मौजूदा निज़ाम नहजे इल्यासी से हटा हुआ है। इस को लेकर शूरा शूरा का शोर मचाया जा रहा है और अमीर नही होना चाहीये कि रट लगाई जा रही है।

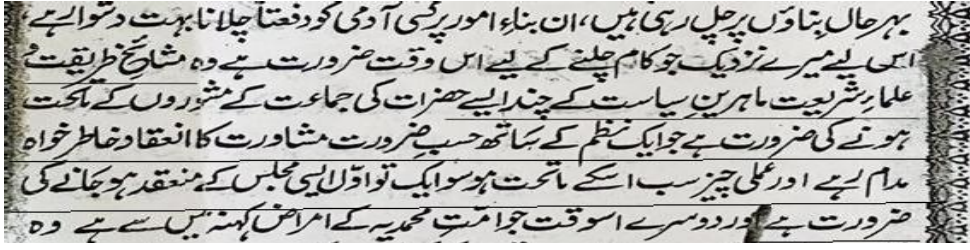
नहजे इल्यासी को मसला बनाकर हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के मकातिब में से अपने मतलब व मफ़ाद कि वो बात को तो निकाली गई जो अपने मफ़ाद पर खरी उतर रही थी, मगर ख़ता इस में भी हो गई क्यों कि इस में जिस शूरा के मुतअलिक़ तहरीर किया है इस शूरा में तीन किस्मों के माहिरीन कि निगरानी कि बात कही गई है जिस में एक तो माहिर ए सियासत है। जिस का दअवत कि इस मेहनत से कोई सरोकार ही नहीं है। यहाँ तक के खुद हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने इस मकतुब पर अमल ना कर के इस को रद्द कर दिया और हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि को अपने बाद जानशीन और अमीर मुकर्रर कर दिया। और इस के बाद न ही हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि और न ही हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने इस को अमल में लिया। जब हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने एक मजबूरी के तहत शूरा बनाई भी तो मकतूबात हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के उस मकतुब पर कोई अमल नहीं किया गया। जब पिछले दो अमीर ही इस पर अमल पेरा नहीं थे तो तीसरे अमीर पर इस का दबाव क्यों बनाया जा रहा है ? और एक ख़ास बात एहबाब कि नज़र करना चाहता हूँ कि जो हज़रात आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफूल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया से खुद ब खुद अलैयहिदगी इख़्तियार कर के तीसरी जगहा मशवराह कर रहे हैं और मर्कज़ का बायेंकाट करने का ऐलान कर रहे हैं और अपने पुराने पन को अपने मफ़ाद कि ख़ातिर दांव पर लगा रहे हैं। मकातिब

हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि में से वोह मकतूब तो तलाश कर लाए जो जाती मफ़ाद कि तकमील कर रहा है। मगर वो मकतूबात जो इन के ऐतराज़ात का मुकम्मल तसपिया कर रहे हैं इन हज़रात ने उन का ज़िक्र तक नहीं किया अगर मकातिब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि को बनज़र ए इन्साफ पढ़ते तो ये हालात नहीं बनते और जहाँ तक हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि और हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि के साथ लम्बा अरसा गुज़ारने कि बात कही जा रही है तो इन हज़रात ने हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि और हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि से इस मकतूब के मुताबिक़ शूरा बनाने का मुतालबा क्यों नहीं किया ? और जब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि के इन्तेक़ाल के बाद जब अमीर बनाने को लेकर इख़्तिलाफ़ हुआ उस वक़्त इस मकतूब कि याद क्यों नहीं आई और इस मकतूब को नज़र अन्दाज़ कर के शेख़ुल हदीस हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि को अमीर क्यों मुक़र्रर किया ? तब शेख़ुल हदीस हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब रहमतुल्लाह अलैहि को इस मकतूब और नहजे इल्यासी को याद क्यों नहीं दिलवाया गया। और अमारत हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि कायम हो गई। और जब हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने बाद अमीर का इन्तख़ब करने के लिए जो दस हज़रात कि शूरा बनाई वोह हज़रात यह हैं (1) हज़रत अक़दस मौलाना सईद अहमद ख़ान साहब रहमतुल्लाह अलैहि (2) हज़रत अक़दस मौलाना मुप्ती ज़ैनुल आबिदीन साहब रहमतुल्लाह अलैहि रायविन्ड (3) हज़रत अक़दस मौलाना उमर साहब पालन पुरी रहमतुल्लाह अलैहि (4) हज़रत अक़दस मौलाना इज़हारूल हसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि (5) हज़रत अक़दस मौलाना जुबैरूल हसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि (6) हज़रत अक़दस मियांजी मेहराब साहब रहमतुल्लाह अलैहि (7) हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बराकातुहुम रायविन्ड (8) हज़रत अक़दस भाई अफ़ज़ल साहब रहमतुल्लाह अलैहि रायविन्ड, (9) हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम (10) हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल मुकीत साहब इंजीनियर रहमतुल्लाह अलैहि बंगला देश।

हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहिने ये शूरा हज़रत उमर फारूक बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहुअनहुम कि इक्तिदा में बनाई थी ताके ये जमाअत हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि के इन्तेक़ाल के बाद तबलीग़ जमाअत के लिये एक अमीर का इन्तेख़ब कर ले इस शूरा कि जमाअत का मक़सद बिल इत्तिफ़ाक़ एक अमीर का इन्तेख़ाब करना था। मगर अफ़सोस है गोधरा के ख़त पर दस्तख़त करने वालों पर के हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने दस अहबाब कि शूरा बनाई थी, इस शूरा के तय किये जाने के वक़्त ये सभी हज़रात मौजूद थे, उस वक़्त भी इन हज़रात को मकतूब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि यानी नहजे इल्यासी कि याद क्यों नहीं आई ?

शूरा बनाने के बाद भी हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि ता हयात अमीर क्यों बने रहे ? और शूरा के अहबाब में से बारी बारी अमीर क्यों नहीं बनाया ? (जैसा के आज यही हज़रात शूरा बनवा कर बारी बारी अमीर बना ने का मुतालबा कर रहे हैं।) और ये शूरा एक अमीर यानी हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि के ताबे रही। जब यह शूरा बनाई जा रही थी उस वक़्त मकतूब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के मुताबिक़ इन तीनों किस्म के लोगों (1) मशाईखे तरीक़त (2) उलमा ए शरीयत (3) माहिरीन ए सियायत को शामिल नहीं किया गया उस वक़्त इस मकतूब पर अमल क्यों नहीं कराया

गया के हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि मंशा के मुताबिक़ शूरा की तकमील कि जाये ? जिस मकतूब का ज़िक्र बड़े ज़ोर व शोर से उठाया जा रहा है उस की वो सतरें स्कैन पेज में देखें।



स्कैन पेज का हिन्दी तर्जुमा देखें।

बहर हाल बिनाओं पर चल रही हैं उमूर पर किसी आदमी को दफ़तन चलना बहुत दूशवार है इस लिए मेरे नज़दिक जो काम चलने के लिए इस वक़्त जरूरत है वोह मशाईखा ए तरीक़त व उलमा ए शरीअत माहिरीन ए सियासत के चन्द ऐ से हज़रात कि जमाअत के मशोरों के तहत होने कि ज़रूरत है जो एक नजम के साथ हसब ज़रूरत मशावरात का इन्अक्राद ख़तीर खुआह मदाम रहै और अमली चीज़ सब इस के मातहत हो सो एक तो अव्वल एसी मजलिस के मूनअक़िद हो जाने कि ज़रूरत हैं। और दूसरे उस वक़्त जो उम्मत ए मुहम्मदिया के अमराज़ केहने में से है वह

इस मकतूब का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर 22 पर देखें।

हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि के इन्तेक़ाल के बाद जब इस शूरा को अमीर का इन्तेखाब करना था तब इन सब के मशवरे से इन सब में बुजुर्ग हज़रत अक़दस मियांजी मेहराब साहब रहमतुल्लाह अलैहि को अपना अमीर मुक़रर किया ताके एक अमीर का इन्तेखाब हो सके मगर अफ़सोस के एक अमीर का इन्तेखाब करने में शूरा मुत्तफ़िक़ नही हो सकी तो इन्ही में से तीन फैसल (1) हज़रत अक़दस मौलाना इज़हारुल हसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि (2) हज़रत अक़दस मौलाना जुबैरुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि (3) हज़रत अक़दस मौलाना सअद साहब दामत बराकातुहुम, को मुन्तख़ब किया गया।

इस फैसले से बाज़ अहले ईल्म हज़रात राजी नही थे। जैसे के हज़रत अक़दस मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्द शहरी सुम्मा मुहाजिर मदनी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते थे अमीर तो एक ही होना चाहिये। हज़रत अक़दस मौलाना सईद अहमद ख़ान साहब मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैहि अकसर फ़रमाया करते थे के अफ़सोस हम अपना एक अमीर तय न कर सके।

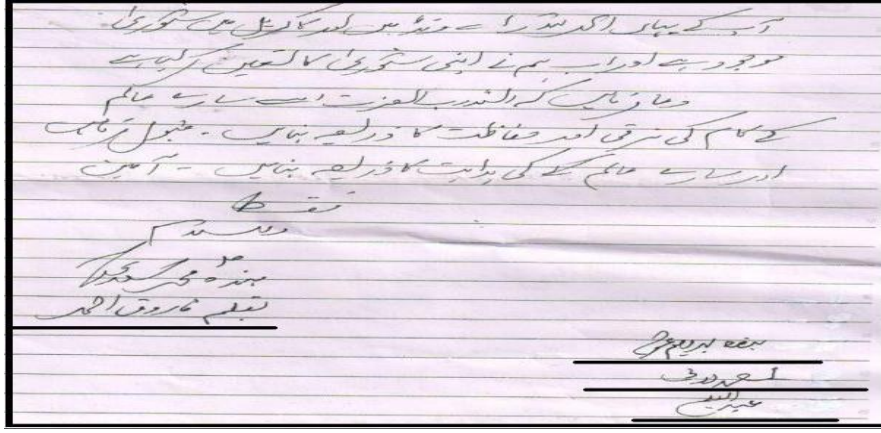
इस के बाद ये तीनों हज़रात बारी बारी से अमीर व फैसल बनते रहे। चन्द माह बाद ही हज़रत अक़दस मौलाना इज़हारुल हसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि का इन्तेक़ाल हो गया तो इन के इन्तेक़ाल के बाद दोबारा वो शूरा की बची हुई जमाअत तीसरे अमीर व फैसल के इज़ाफ़े के लिए जमा नही हुई। हज़रत अक़दस मौलाना इज़हारुल हसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि के बाद ये दोनों हज़रात (1) हज़रत अक़दस मौलाना जुबैरुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि (2) हज़रत अक़दस मौलाना सअद साहब दामत बराकातुहुम, ही अमीर व फैसल बनते रहे। (उस वक़्त भी इन में से किसी को इस बात की ज़रूरत मेहसूस नही हुई की अमीर, फैसल या शूरा में से जिन अहबाब का इन्तेक़ाल हो गया है उन की जगह दूसरे का इन्तेखाब किया जाए।) जब की ये दोनों हज़रात ही अमीर व फैसल बनते रहे।

जब इन दोनों में से कोई एक सफ़र में होता तो दूसरा फ़र्द ही अमीर व फैसल होता था। हज़रत अक़दस मौलाना जुबैरुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि के इन्तेक़ाल के बाद अब इन दोनों में से सिर्फ़ एक हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि के मुन्तख़ब अमीर

व फैसल बाकी रह गए हैं। (याद रहे कि हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि की मुन्तख़ब शूरा में से इस वक़्त दो शख़सियतें बाकी हैं (1) हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बराकातुहुम रायविन्ड (2) हज़रत अक़दस मौलाना सअद साहब दामत बराकातुहुम, इस में हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बराकातुहुम रायविन्ड के अमीर फैसल हैं और उन के मुल्क की शूरा उन के ताबे है जब भी हाजी साहब कहीं सफ़र वग़ैराह पर होते हैं तो अपनी जगह किसी को फैसल मुक़र्रर कर के जाते हैं। निज़ामुद्दीन में हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम कहीं सफ़र वग़ैराह पर होते हैं तो अपनी जगह किसी को फैसल मुक़र्रर कर के जाते हैं। बाकी हैं।) हज़रत अक़दस मौलाना सअद साहब दामत बराकातुहुम, इंडिया में सिर्फ़ एक ही शूरा के फ़रद हैं जो हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि के मुन्तख़ब शूरा में से एक अमीर व फैसल रह गए हैं।

जिन को खुद हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने दस अफ़राद कि शूरा में से एक फ़र्द शूरा इन्हें भी बनाया था। और जैसा कि हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि शूरा बनाते वक़्त जो मन्शा थी के ये दस हज़रात कि शूरा में से एक अमीर का इन्तेखाब किया जाये वो इख़्तिलाफ़ की वजह से नहीं हो पाया था। जिस पर हज़रत अक़दस मौलाना सईद अहमद ख़ान साहब मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैहि को पुरी जिन्दगी क़लक़ और अफ़सोस करते रहे कि इख़्तिलाफ़ कि वजह से एक अमीर नहीं बन सका। और हज़रत अक़दस मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्द शहरी सुम्मा मुहाजिर मदनी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते थे अमीर तो एक ही होना चाहिये। इन सब कि मन्शा के मुताबिक़ अब जाकर मुआमला असल कि तरफ़ लौट कर आया है। के जिस पर हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि तरतीब पर उन कि बनाई हुई शूरा में से मुन्तख़ब अमीर हैं। याद रहे के हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम अलग से अमीर नहीं बने हैं। बल्के हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि बनाई शूरा में से एक फ़र्द बाकी हैं इस लिए अब वही अमीर व फैसल हैं।

कुछ पुराने हज़रात का केहना था कि पाकिस्तान और बंगला देश कि तरहा निज़ामुद्दीन में भी शूरा बनानी चाहिए तो इस का वादा हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बराकातुहुम रायविन्ड से कर के आए थे कि इंडिया जाकर निज़ामुद्दीन कि शूरा भी बनाली जाए गी इस वादे के मुताबिक़ हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि नहज के मुताबिक़ 6/7/8 दिसम्बर 2015 को कुल हिन्द मशवरे में तमाम मुल्क कि मौजूदगी में मशवरे से 9 अफ़राद पर मुश्तमिल शूरा बनाई गई जिस में तमाम मुल्क के हर सूबे के लोग मौजूद थे। हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम को जो (हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि मुन्तख़ब शूरा के एक ही फ़र्द हैं) इस शूरा अमीर व फैसल हैं जैसा के हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि शूरा के अमीर व फैसल थे, और शूरा उन के ताबे थी। इस शूरा कि इत्तिला हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बराकातुहुम रायविन्ड जो के हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि मुन्तख़ब शूरा के फ़र्द और रायविन्ड कि शूरा के अमीर हैं, को ख़त के ज़रिये दी गई। और यह ख़त खुद भाई फ़ारूक़ बैंगलौर ने अपने क़लम से लिखा है और उस ख़त पर हज़रत अक़दस मौलाना ईब्राहीम देवला साहब दामत बराकातुहुम, हज़रत अक़दस मौलाना अहमद लाट साहब दामत बराकातुहुम और हज़रत अक़दस सैय्यद अब्दूल अलीम साहब दामत बराकातुहुम के दस्तख़त हैं। देखिये वो दस्तख़त वाले ख़त कि स्कैन कॉपी।



स्कैन पेज का हिन्दी तर्जुमा देखें।

आप के यहाँ अलहम्दुलिल्लाह रायविन्ड और ककरेत में शूरा मौजूद है और अब हमने अपनी शूरा का तैय्यून कर लिया है।
 बुआ फरमाएँ के अल्लाह रब्बुल ईज़ज़त इसे सारे आलम के काम कि तरक्की और हिफज़त का ज़रिआ बनाएँ। कबुल फरमाएँ और सारे आलम कि हिदायत का ज़रीया बनाएँ। आमीन

फकत
 वस्सलाम

बन्दा ईब्राहीम अफीअन
 अहमद लाट
 अब्दुल अलीम

बन्दा मुहम्मद साद अफीअन
 बिलकलम फास्क अहमद

इस खत का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर 24 पर देखें।

हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि का वह मकतूब जो इन हज़रात ने खत में तहरीर किया जिस पर पिछले दोनों दौर में पेश करदा मकतूब के मुताबिक़ अमल नहीं हुआ अब नई नहज को वजूद देने कि कोशिश कि जारी है ? और वह मकतूब तो खुद हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि, अमालन मनसुख कर चूके थे और दोनों पिछले अमीर भी इस पर अमल पेरा नहीं थे तो इस मनसुख अमल कि क्यों याद आरी है। जब के इस वक़्त आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफुल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया कि तरतीब पिछले तीनों दोरों के मुताबिक़ चल रही है। लिहाज़ा अब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम को ये कहना के शूरा के अफ़राद को भी फैसल बनाएँ इस तरहा का दावा करना अकल से बालातर है। क्यों कि यह अमल न तो सीरत में मिलता है ना ही खुल्फा ए राशेदीन से यह अमल साबित है ना शरियत में इस का ज़िक्र है। रहा सवाल इस का के इन दावों के पिछे दिल में छूपे वोह मक़सिद के हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम नहीं होना चाहिए कियों की उन के रहते हमारे अग़राज व मफ़ाद पूरे नहीं हो सकते इसलीये उन को शूरा के ताबे किया जाए इस लिए इन हज़रात का सच्चाई से दर किनार हो कर इलज़ाम तराशियों कर दअवत के अमले को गुमराह करना उन कि साज़िश ही समझी जाएगी। तीनों मुल्कों में अब शूरा मौजूद है। और तरतीब पर भी है। रायविन्ड में खुद शूरा के अमीर व फैसल हज़रत अक़दस हाजी अब्दुल वहाब साहब दामत बराकातुहुम हैं। और उन कि ग़ैर मौजूगी में कोई दूसरा फैसल होता है। और यही तरतीब आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफुल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया में भी कायम है। और खुद हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम अगर खत भी तहरीर करते हैं तो उस में अपने दस्तखत के साथ अहले शूरा भी तहरीर करते हैं। यह दलील है इस बात कि के आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफुल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया में शूरा मौजूद है, देखें हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम के खत का स्कैन पेज व उस का हिन्दी तर्जुमा

اور کام ترقی کریگا۔ مولانا یوسف فرماتے تھے اگر ہر دو ماہ پر نظام الدین نہ آئے رہے تو اپنی اپنی جگہ لگے
 الحشر اسی فکر کی ایک کڑی آپ حضرات کی ہر دو سال میں منظم دینی مسجد نظام الدین کی آمد
 راتینور اور منظم دین کا اجتماع ہے۔ اللہ سبحانہ و تعالیٰ آئندہ ماہ مارچ ۲۰۱۶ میں ہی آپ
 حضرات کی آمد کو قبول فرمائے اور آپ اپنی محنت میں اللہ سے اپنی امید بھی رکھیں
 اور نگار پڑھ چڑھ کر اللہ تعالیٰ سے دعائیں کریں اللہ سبحانہ و تعالیٰ اسی محنت کی حقیقت و بصیرت
 ہم کو عطا فرمائے۔

نصرت الدین
 بندہ کبر و کبر
 واصل شری

۲۳ شوال المکرم ۱۴۳۷ھ
 ۳۱ جولائی ۲۰۱۶ء

سکین पेज का हिन्दी तर्जुमा देखें।

और काम तरक्की करेगा मौलाना यूस्फ रह. फरमाते थे अगर हर दो माह पर निज़ाममदीन न आते रहे तो अपनी अपनी कहने लगोगे अलहम्दुलिल्लाह इसी फिकर की एक कड़ी आप हज़रात कि हर दो साल में बंगले वाली मस्जिद निज़ाममदीन कि आमद रायविन्द और बंगलादेश का ईजतेमा है। अल्लाह सुबहानहुतआला आईन्दा माह मार्च 2017 में भी आप हज़रात कि आमद को कबूल फरमाए और आसान फरमाए और अपनी मेहनत में अल्लाह से अच्छी खम्मीद भी रखें और पढ़ पढ़ के अल्लाह से दूआएँ करें अल्लाह सुबहानहुतआला इस मेहनत कि हकीकत व बसीरत हम को अताअ फरमाए।

14 शबाल मुकर्रम 1437 हि.
 31 जुलाई 2016

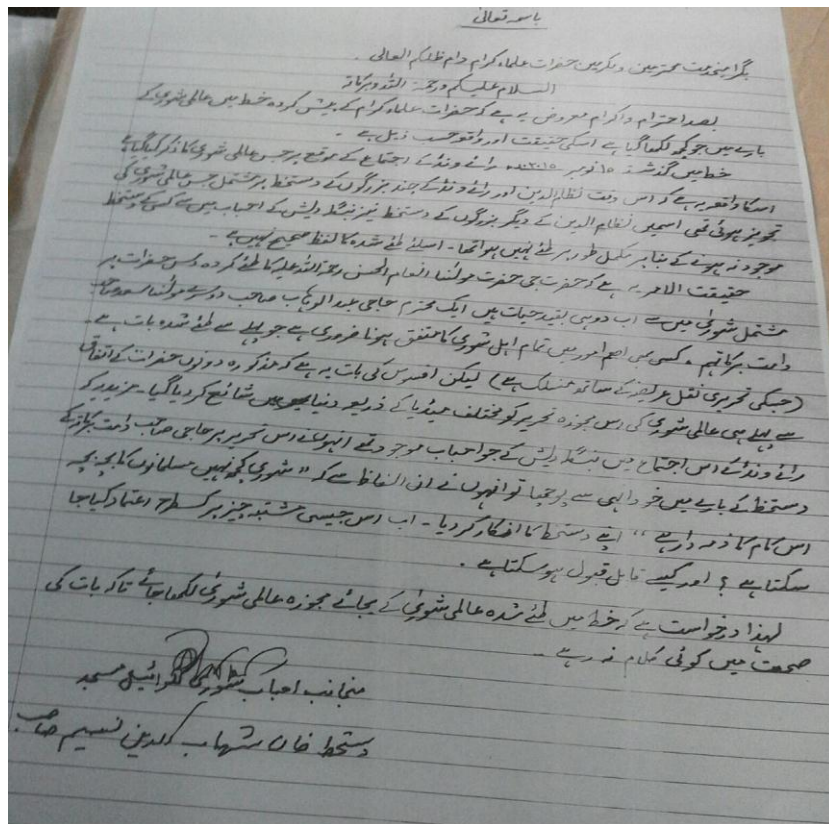
फकत वस्सलाम
 बन्दा मुहम्मद सअद गफरुल्लाह
 व अहले शूरा

इस खत का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर 26 पर देखें।

इस वक़्त आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफुल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया नहज हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि, हज़रत अक़दस मौलाना युसूफ साहब रहमतुल्लाह अलैहि और हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि के मुताबिक है। एक और बात एहबाब के सामने वाज़ेह हो जाये कि जिस वक़्त हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने दस अफराद पर मुशतमिल शूरा बनाई और अमीर का इन्तेखाब करने कि बात कही थी इस में यह बात भी वाज़ेह थी इन हज़रात में से जो भी अमीर मुनतख़ब होगा वोह आलमी अमीर हो गा लेकिन इख़्तलाफ कि वजह से एक अमीर मुन्तख़ब नहीं हो सका तो यह बात भी वाज़ेह है कि इन दस शूरा के अफराद में से आखिर में जो बा हयात रहेगा वही अमीर ए आलम होगा इस वक़्त हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि शूरा में से दो नफर ब हयात हैं अलहम्दुलिल्लाह यह हैं। (1) हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बराकातुहुम रायविन्द (2) हज़रत अक़दस मौलाना सअद साहब दामत बराकातुहुम, मुस्तक़बल में इन हज़रात में से जो ब हयात रहेगा वही पूरी दुनिया का अमीर होगा, अलहम्दुलिल्लाह इस बात कि ताईद दुनिया के मुमालिक ने कर दी है। सच्चाई से मुह मोड़ना पुराना पन और हक़ परस्ती नहीं है। पुराना पन और हक़ परस्ती तो यह है के सच्चाई का सामना करें और उसे कबूल करें।

यह बात भी हमारे ज़ेहनों में साफ़ होनी चाहिए कि आलमी शूरा नाम कि कोई शूरा न बनाई गई है न बनी है और न ही इस का वजूद है। जो लोग आलमी शूरा के बनाए जाने के नाम से झूठी ख़बर फैलाकर दअवत के काम करने वालों में इन्तेशार फैलाने कि कोशीश कर रहे हैं या तो वह दअवत के काम में नये हैं क्यों कि यह अहबाब दावत के काम कि असल हकीकत व बुनियादों और छिले हालातों से न वाकिफ़ हैं और इस वक़्त में जो बग़ैर बताए बग़ैर वजह बताए मर्कज़ छोड़ कर या छूट्टी लेकर अचानक चले गए हैं और मर्कज़ से अलेदह होकर जगह जगह मशोरे कर रहे हैं उन एक तरफ़ा बतें सून कर इस अमल में मुलव्विस हैं। या ऐसे अहबाब जो जमाअत के काम को अपनी ज़ेहनी फ़िक्रो ख़याल से काम कि नहज को बदल कर अपने ईल्म, फ़िरासत सियासी तदबीरों से काम चलाना चाहते हैं या मुख़ालिफ़ तहरीकों या तनज़ीमों के मुकर्रर करदा अफराद हैं। क्यों कि हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बराकातुहुम रायविन्द ने अपने खत में इस को भी साफ़ तौर से वाज़ेह

अब इन तमाम दलाइल से साबित हो गया कि इस आलमी शूरा कि क्या हकिकत है अपने आप को मुखलिसीन केहने वालों कि इतनी नाज़ेबा हरकत के अपने मफाद को हासील करने के लिए किस क़दर झूट फरेब का सहारा लेकर मौलाना सअद साहब दामत बराकातुहुम के खिलाफ गिरी हुई साज़िश कर रहे हैं। बंगला देश कि शूरा के खत से साबित हो गया कि प्रस्तावित आलमी शूरा को तैय होने से पेहले ही मुख्तलीफ मिडीया के ज़रीए दुनिया भर में शाए कर दिया गया। क्या यह नाज़ेबा हरकत मुखलिसीन की या पुराने कि हो सकती है ? अगर इस से कोई दामन बचाने कि कोशिश करता है तो बच नहीं सकता, क्योंकि इन इन्तेशार को फैलाने वालों और ज़ामअत के शीराज़े को बिखेरने वालों को रोका क्यों नहीं ? इस से साफ ज़ाहिर हैं उन कि ख़ामोशी इस तरह कि हरकतों की इजाज़त देती है। बंगला देश के उल्मा को लिखे गए जवाबी खत कि स्कैन कापी।



बंगला देश कि शूरा का खत

ब गिरामी खिदमत मोहतरमीन व मुकरमीन हज़रात उल्मा ईकराम दामज़िल्लकुमुलआली

अस्सलाम अलैयकुम व रहमतुल्लाह व बराकतहु।

ब सद एहताराम व इकराम मआरुज़ ये है के हज़रात उल्मा ईकराम के पैश करदा वोह खत में आलमी शूरा के बारे में जो कुछ लिखा गया है उसकी हकीकत और वाकिआ हस्बेज़ैल है।

खत में गुज़िश्ता 15 नवम्बर 2015 रायविन्द के इज्तेमा के मोके पर जिस आलमी शूरा के बारे में ज़िक्र गया है उसका वाकिआ ये है के उस वक़्त निज़ामुद्दीन और रायविन्द के घन्द बुजुरगों के दस्ताख़त पर मुशतमिल जिस शूरा कि तजयिज़ हुई थी उस में निज़ामुद्दीन के दिगर बुजुरगों के दस्ताख़त नीज़ बंगला देश के अहबाब में से किसी के दस्ताख़त मौजूद न होने कि बिना पर मुकम्मिल तौर पर तै नही हुआ था। इस लिए तैय शुदा का लफ़ज़ सही नही है।

हकीकतउल अम्र ये है के हज़रतजी मौलाना इनामुलहसन रहमतुल्लाह अलैहि का तैय करदा दस हज़रात पर मुशतमिल शूरा में से अब दो ही ब कैद ए हयात हैं एक मोहतरम हाजी अब्दुल वहाब साहब दूसरे मौलाना सअद साहब दामत बराकातुहुम, किसी भी ऊमुर में तमाम एहले शूरा का मुत्तफ़िक होना ज़रूरी है जो पहले से तैय शुदा बात है। (जिस कि तहरीरी नक़ल अरीजे के साथ मुन्सलिक है।) लेकिन अफ़सोस कि बात ये है के मज़क़ुरा दोनों हज़रात के इत्तेफ़ाक से पहले ही आलमी शूरा कि मौजूज़ाह (प्रस्तावित) तहरीर को मुख़तलीफ़ मिडीया के ज़रीए दुनिया भर में शाए कर दिया गया। मज़ीद ये के रायविन्द के इस इज्तेमा में बंगला देश के जो अहबाब मौजूद थे उन्होंने इस तहरीर पर हाजी साहब दामत बराकातुहुम के दस्ताख़त के बारे में खुद ही पूछा तो उन्होंने ने इन अलफ़ाज़ से के " शूरा कुछ नही मुसलमानों का बच्चा बच्चा इस काम का ज़िम्मेदार है।" अपने दस्ताख़त से इन्कार कर दिया। अब इस जैसी मुश्तबाह चीज़ पर किस तरह एतमाद किया जा सकता है ? और कैसे काबिल ए कबुल हो सकता है।

लिहाज़ा दरख़्वास्त है के खत में तैय शुदाह आलमी शूरा के बजाए मौजूज़ाह (प्रस्तावित आलमी शूरा) शूरा लिखा जाए ताके बात कि सेहत में कोई कलाम ना रहे।

मिनजानिब अहबाब शूरा काकरेल मस्जिद

दस्ताख़त खान शहाबुद्दीन नसीम साहब

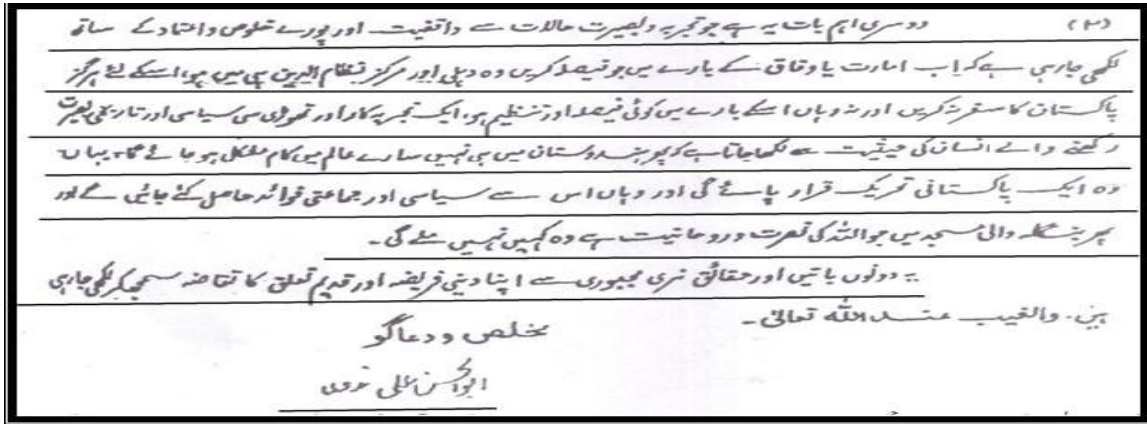
यहाँ एक बात और साफ हो जाती है कि हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने जो शूरा बनाई थी वोह दअवत तबलीग़ का आलमी अमीर मुन्तख़ब करने के लिए बनाई थी और उस में तीनों मुल्कों के अहबाब को शामिल किया गया था ताकी इन दस शूरा के अफ़राद में से जो फ़र्द मुन्तख़ब हो वह पूरे आलम के लिए अमीर हो।

रही बात आलमी शूरा की तो उस आलमी शूरा को पूरी तरह हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बराकातुहुम रायविन्द के खत में रद का ज़िक्र है उस में यह वाज़ेह कर दीया गया है कि यह शूरा निज़ामुद्दीन की शूरा है ना के पूरी दुनिया की शूरा। निज़ामुद्दीन कि शूरा तो बनी हुई है। जिस का ज़िक्र तफ़सील से उपर आगया है। हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि अमीर के लिए बनाई गई शूरा में से दो फ़र्द अभी मौजूद हैं दोनो आलम के ज़िम्मेदार हैं बाद में इन में से जो एक ब हयात रहेगा वही आलम की तबलीगी जमाअत का अमीर रहेगा।

रहा सवाल आलमी मर्कज़ का तो ये बात वाज़ेह है कि आलमी मर्कज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफ़ुल उलुम बसती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया ही होगा दअवत तबलीग़ का कोई दुसरा मर्कज़ नही हो सकता इस के मुत्तालिक तो पूरी दुनिया मुत्ताफ़िक़ है। मशवरे से काम कि सारी तरतीब आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफ़ुल उलुम बसती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया में ही बने गी इस के लिए कहीं जाने कि ज़रूरत नही है।

मर्कज़ से अलेहदगी सिवाए इन्तेशार के और कुछ वजूद में नही लाएगी। इस बात कि नसीहत खुद हज़रत अक़दस मौलाना अबुल हसन अली नदवी (अली मियाँ) रहमतुल्लाह अलैहि ने पुरानो को कि थी। आलमी मर्कज़ को छोड़ कर कहीं और जाना पुराना पन नही बल्के नहज ए ईल्य़ासी को तर्क करना है। यानी नहज ए ईल्य़ासी को खुद तर्क करें और बदनाम हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम को करें कि पुरानी नहज से अलग हो गये। अफ़सोस सद अफ़सोस है ऐसी बातों पर। देखये हज़रत अक़दस मौलाना अबुल हसन अली नदवी (अली मियाँ) रहमतुल्लाह

अलैहि के खत का स्कैन पेज



स्कैन पेज का हिन्दी तर्जुमा देखें।

(2) दूसरी अहम बात ये है जो तजरबा व बसीरत ए हालात से वाकफियत और पूरे खुलुस व एतमाद के साथ लिखी जा रही है के अब अमरत या वफाक के बारे में जो फैसला करें वोह देहली और मर्कज़ निजामुद्दीन ही में हो, इस के लिए हरगीज़ पाकिस्तान का सफर न करें और न वहाँ इस के बारे में कोई फैसला और तनज़ीम हो, एक तजरबे कार और थोड़ी सी सियासी और तारीखी बसीरत रखने वाले इन्सान कि हैसियत से लिखा जाता है के फिर हिन्दोस्तान में ही नही सारे आलम में काम मुश्किल हो जाएगा, यहाँ वोह एक पाकिस्तानी तत्हेरीक करार पाए गी और वहाँ इस से सियासी और जमाआती फवाईद हासील किये जाएंगे और फिर बंगले वाली मस्जिद में जो अल्लाह तआला कि नूसरत व रुहानियत है वोह कहीं नही मिलेगी।

ये दोनों बातें और हकाईक निरी मजबूरी से अपना दिनी फरीज़ा और कदीम तआलुक का तकाज़ा समझ कर लिखी जा रही हैं। वलगुयबु इन्दल्लाह तआला

मुखलिस व दुआगो
अबुल हसन अली नदवी

इस खत का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर 17 पर देखिये।

अगर बात मकातिब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि है तो इन्साफ की नज़र से उस का मुतालेआ करें तो उन मकातिब में मुन्तख़ब अहादीस भी मकातिब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि में मौजूद नज़र आएगी।

अगर नहजे ईल्यासी कि बात करें तो उस दौर में न तो हयातुस्साहाबा रज़ि. थी और न बैरुन का निज़ाम औ न ही बड़े इज्तेमाआत न ईलाकों के जसेड व गैराह वगैराह ये सब, हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के दौर में नही थी बाद में काम में दाखील हुए! मार ईस का कहीं तज़केराह तक नही है के ये नहजे ईल्यासी में नही था अब क्यों है। अल्लाहुम्मा हफिज़ना मिनहु:

एहल ए गुजरात व दिगर हज़रात कह रहे हैं के दो तीन बातें जो नहज से हटी हुई हैं।

हज़रत अक़दस डॉक्टर सनाउल्लाह ख़ान साहब दामतबरकातहुम ने रायविंड में बहुत से अहले मशवरा कि मौजूदगी में खुद कहा के हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बरकातुहुम ने दो तीन बातें जो काम में दाखिल कर दी हैं। सिर्फ इन्ही दो तीन बातों कि वजह से हर इलाके में दो ज़ेहन बन गए हैं।

इसी तरह एक परचा गोधरा गुजरात से आम किया गया जिस में लिखा था काम के पुरानी नहज कि हिफाज़त के कि खातिर हम अब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बरकातुहुम के साथ मिलकर नही चलेंगे। और आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफूल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया नहीं आएंगे।

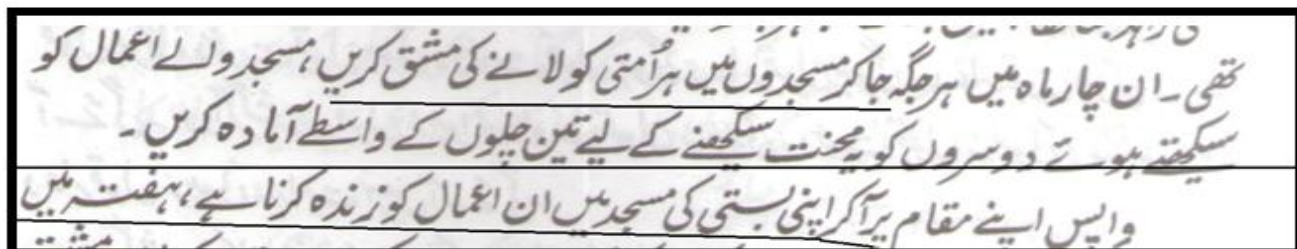
इन हज़रात के मुताबिक़ दो तीन बातों या पुरानी नहज यानी नहजे ईल्यासी कि बात करें तो हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के दौर में ना तो हयातुस्साहाबा रज़िअल्लाहुन थी और न बैरुन का निज़ाम और न ही बड़े इज्तेमाआत न ईलाकों के जोड़ (बैरुन

के जोड़ व ईजतेमाआत में जाने कि तरतीब केनेडा अमेरिका व दिगर ममालिक इस में नहजे इल्यासी याद नही आई) मर्कज़ पर तिमाही जोड़ वगैरा वगैरा ये सब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के दौर में नही थे बाद में दअवत के काम में दाखिल हुए। मगर इन नये कामों के काम में दाखिल किए जाने का तज़क़िराह तक नही है के ये नहजे इल्यासी में नही था अब क्यों है ? (अल्लाहुम्मा अहफज़ना मिनहु)

(2) दूसरा इलज़ाम ये लगाया जा रहा है के दअवत तअलीम इस्तक़बाल/मस्जिद कि आबादी नहजे इल्यासी से हटी हुई है।

इन एहतिजाज करने वालों से एक सवाल किया के इतनी शिद्दत कि वजह क्या है ? तो कहा के हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के नहज को हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम अकेले बदल रहे हैं। जैसा के हज़रत अक़दस प्रोफेसर सनाउल्लाह खान साहब दामत बराकातुहुम ने बताया के सिर्फ़ दो तीन बातें हैं। जिस में एक ये है के ढाई घंटे कि मेहनत कि तरतीब यानी (सारी दुनिया में ये तरतीब बनाएँ के मस्जिद को आमाल से आबाद रख कर दो दो कि जोड़ी बने जो बाहर ग़फ़लत के माहोल से हर फर्दे उम्मत को मुख़्तसर बात कर के मस्जिद में लाकर मस्जिद में जारी अमल में बिठाएँ और मस्जिद में तफ़सीली बात करे फिर ख़ुरूज कि तशकील करे और मस्जिद में मुस्तकील वक़्त देने कि तरगीब भी दे।) अब इस तरतीब को दअवत तालीम इस्तक़बाल या मस्जिद कि आबादी कि मेहनत भी से भी ताबीर किया जा सकता है। या मस्जिद की आबादी की मेहनत से ताबिर किया जा सकता है। जैसा के हज़रत अक़दस प्रोफेसर ख़लिद सिद्दीकी साहब दामत बराकातुहुम इस को अपनी तहरीर में नहज से सख़्त इन्हेराफ़ लिखते हैं। जिस बात को यह हज़रात सिर्फ़ दो तीन बातें कह रहे हैं। के सख़्त इन्हेराफ़ है। कोई केहता है ढाई घंटे कि मेहनत कि तरतीब है।

अब देखिये हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि के मकातीब में भी यह लिखा है के “ख़ुरूज के अय्याम में हर फर्दे उम्मत को मस्जिद में लाने कि मशक् करनी है। आप अलैहिस्सलाम के ज़माने में तशकील मस्जिद से होती थी, अल्लाह के ज़िक्र कि मजलिस भी मस्जिद में लगती थी। हर शख्स मस्जिद आता और अपना दीन मस्जिद से लेकर अपने मक़ाम पर जारी करता था। फिर फरमाया के ख़ुरूज के बाद मुक़ाम पर आकर इसी मशक् पर कायम रहै।” (मकातिब हज़रत अक़दस मौलाना युसूफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ख़त नम्बर 17 हेजाज़ ए मुक़दस जाने वाली जमाअत के नाम सफ़ा न0165 पैराग्राफ़ 3) देखें स्कैन पेज

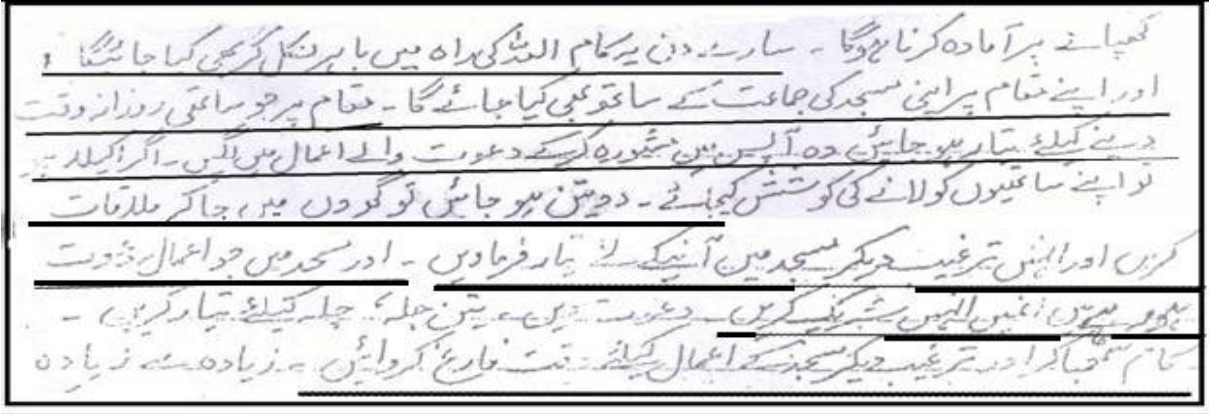


स्कैन पेज का हिन्दी तर्जूमा देखें।

इन चार माह में हर जगह जाकर मस्जिदों में हर उम्मत को लाने कि मशक् करें, मस्जिद वाले आमाल को सिखते हुए दूसरों को ये मेहनत सिखने के लिये तीन चिल्लों के वासते आमदह करें।
वापस अपने मुक़ाम पर आकर अपनी बस्ति कि मस्जिद में इन आमाल को ज़िन्दा करना है।

इस खत का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर 18 पर देखिये।

लेकिन इस तरतीब पर बाकायदा अमल कम से कम था या किल्कुल ही नहीं था। फिर 12 नवम्बर 1999 में पुराने काम करने वाले जमाअ हुए जिन में हज़रत अक़दस मौलाना मुफ्ती जैनुलआबिदीन साहब रहमतुल्लाह अलैहि रायविन्द, हज़रत अक़दस मौलाना जुबैरुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि, हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बराकातुहुम रायविन्द, हज़रत अक़दस भाई अफ़ज़ल साहब रहमतुल्लाह अलैहि रायविन्द, हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम और बाकायदा इस तरतीब को काबू में लाने के लिए मशवराह हुआ और एक तहरीर तैयार कि गई इस में मस्जिद कि आबादी और मुकामी मेहनत में मुलाकात कर मस्जिद में लाने कि मेहनत कि जाय इस को बकायदा तहरीर कर दस्तखत सब्त किये गये। तहरीर को क़लम बन्द करने वाले भाई मोहसिन गुजराती हैं। देखे स्कैन पेज।

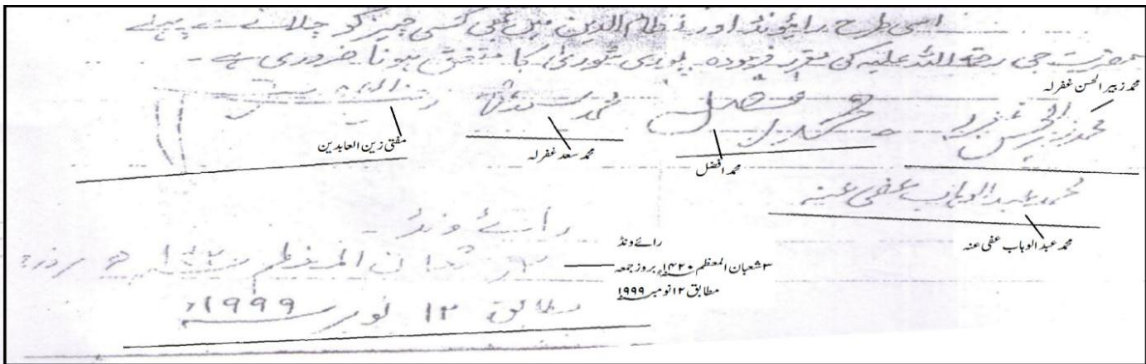


स्कैन पेज का हिन्दी तर्जुमा देखें।

खपाने पर आमदह करना होगा। सारे दिन ये काम अल्लाह कि राह में बाहर निकल कर भी किया जाएगा। और अपने मुकाम पर अपनी मस्जिद कि जमाअत के साथ भी किया जाएगा। मुकाम पर जो साथी रोज़ाना बक़्त देने के लिए तैयार हो जाएँ वोह आपस में मशवराह कर के दावत वाले आमाल में लगेँ। अगर अकेला हो तो अपने साथियों को लाने कि कोशिश कि जाए दो तीन हो जाए तो घरों में जाकर मुलाकात करें और उन्हें तरगीब दे कर मस्जिद में आने के लिए तैयार फरमावें। और मस्जिद में जो आमाल ए दावत हो रहे हैं उन में उन्हें शरीक करें। दावत दें तीन चिल्ले, चिल्ले के लिए तैयार करें काम समझा कर और तरगीब देकर मस्जिद के आमाल के लिए बक़्त फारिग करवाएँ। ज़ियादा से ज़ियादा

इस खत का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर 18 पर देखिये।

इस तहरीर पर इन पांचों बुजुर्गों के दस्तखत हैं। और ये पांचों हज़रात हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि बनाई शूरा के मुन्तखब अहबाब हैं।



स्कैन पेज का हिन्दी तर्जुमा देखें।

इस तरह रायविन्द और निज़ामुद्दीन में भी किसी चीज़ को चलाने से पहले हज़रत जी रहमतुल्लाहि अलैहि कि मुक़र्रर पूरी शूरा का मुत्तफ़िक़ होना ज़रूरी है।
 मुहम्मद जुबैरुल हसन ग़फ़रुल्लाहु , मुहम्मद अफ़ज़ल, मुहम्मद सअद ग़फ़रुल्लाहु (मुफ़ती)
 ज़ैनुलआबिदीन
 मुहम्मद अब्दूल वहीब अफीअनहु

रायविन्द
 2 शाबानुल मुअज़्ज़म 1420हि0
 मुताबिक 12 नवम्बर 1999 ई0

इस ख़त का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर 18 पर देखिये।

इस खत के तहरीर में आने के बाद हज़रत अक़दस मौलाना इब्राहीम देवला साहब दामत बराकातुहुम का बयान मर्कज़ के हाल में हुआ जहाँ अरब मेहमान खाना खाते हैं। और इस में मौलाना ने बहुत खूबसूरत अन्दाज़ से बात मिसाल के ज़रिये समझाई के एक आदमी ने कहा मुझे अनार चाहिए दूसरे ने कहा नहीं रुमान (अरबी में अनार को रुमान कहते हैं) चाहिए तीसरे आदमी ने अनार ही मांगा लेकिन इंग्लिश का लफ़्ज़ बोला तो अब झगड़ा उरुज़ पर पहुंच गया, इतने में एक ठेले पर अनार वाला अनार लेकर गुज़रा तो सब ने कहा मुझे तो यही चाहिए इस पर झगड़ा ख़त्म हो गया। फिर फरमाया के इसी तरह आपस में इख़िलाफ़ होते हैं फिर जब वो शक्ल सामने आ जाती है जो मक़सद है तो सारा झगड़ा ख़त्म हो जाता है। फिर मौलाना के बयान के बाद भाई फारुक़ साहब बैंगलौर वालो ने इस तरतीब कि तहरीर पढ़ कर सारे पुरानों के सामने सुनाई। (वह तहरीर दस्तख़त शुदा महफूज़ है।) ख्वाह कोई कितना ही इख़िलाफ़ करे।

इसी तरह जब करनाल कि एक जमाअत के बारे में जो कुवैत में एक खास तरतीब (दअवत तालीम इस्तक़बाल) पर काम कर रही थी। हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बरकातुहुम रायविन्द और आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफुल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया के ज़िम्मेदारों से मालुम किया तो हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बरकातुहुम रायविन्द ने इस मज़कूरा दअवत तालीम इस्तक़बाल वाली तरतीब पर काम करने को लिखा जो मस्जिद कि आबादी से मुत्तालिक़ है। इस कि तफ़सील ऊपर लिखी गई है। और फिर इस कि एक कॉपी आलमी मर्कज़ आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफुल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया से ये जवाब लिखा के हज़रत अक़दस मौलाना जुबैरुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि व हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम दोनों शूरा हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बरकातुहुम रायविन्द कि राय से मुत्तफ़िक़ है। ये बात 2011 कि है। अब 2016 में यह कहना के दअवत तालीम इस्तक़बाल वाले अमल को अकेले हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफुल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया भेजी। और इस में लिखा अगर आप हज़रात मेरी राय से मुत्तफ़िक़ हों तो कुवैत इरसाल कर दिया जाए। इस पर साहब दामत बरकातुहुम ने चलाया है। एक बेदलील बात और सरीह बोहतान है। और ये ख़त उन के क़लम से लिखा है निहों ने गुजरात से आये हुए ख़त में दस्तख़त भी किये हैं। (ब क़लम मोहसिन)

हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बरकातुहुम रायविन्द का मामुल है पुराना होने के बावजूद हर काम से मुत्तअलिक़ ख़त लिख कर आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफुल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया से इत्तेफ़ाक़ कि पूरी कोशीश करते हैं।

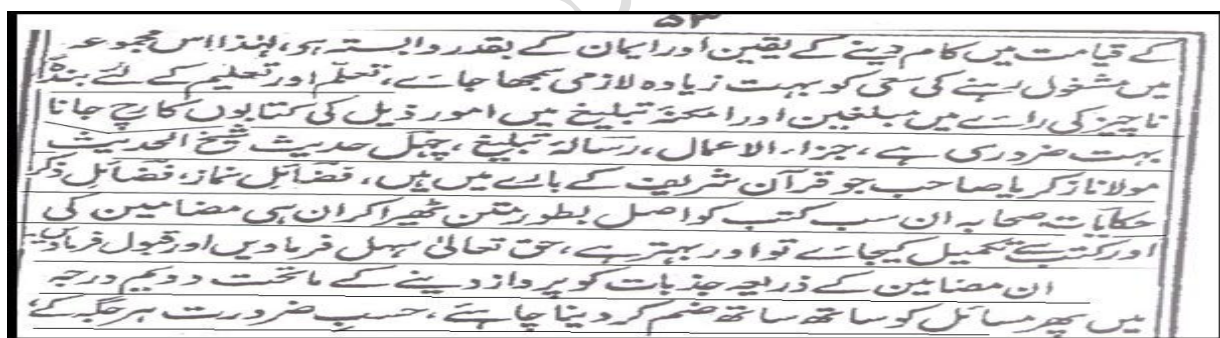
लेकिन आज उन के इर्द गिर्द रहने वाले अपनी तरफ से ख़त लिख कर आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफुल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया को इत्तेला देते हैं के हम हज आपके साथ नहीं करेंगे। और लिखते हैं के इस सिलसिले में हज़रत अक़दस हाजी अब्दूल वहाब साहब दामत बरकातुहुम रायविन्द से कोई बात भी न कि जाए। कहीं वह इत्तेफ़ाक़ कि

सूरत न पैदा कर दें।

इस लिए तमाम अहबाब से दरखास्त है के इस वक़्त शूरा बनाने कि कोई दलील न होने कि वजह से ही सिर्फ ये बात कही जा रही है के दअवत तालीम इस्तक़बाल वाला अमल बग़ैर मशोरे के हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम ने शुरू किया है। लेकिन इस से मुलहिक़ तहरीर इस बात कि गवाही दे रही है के ये इल्ज़ाम ग़लत और बेबुनियाद है।

(3) तीसरा इल्ज़ाम ये लगाया जा रहा के मुन्तख़ब अहादीस नहजे इल्यासी से हटी हुई है।

अगर बात मुन्तख़ब अहादीस कि है तो हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के मकातिब इन्साफ़ कि नज़र से मुताआला करें तो मुन्तख़ब अहादीस मकातिब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि में नज़र आ जाए गी। मकातिब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि को इन्साफ़ कि नज़र से बग़ैर देखें तो मुन्तख़ब अहादीस मकातिब हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहिकि मन्शा के मुताबिक़ नज़र आती है। जो हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के मकातिब में आप कि फ़िक्र और मुस्तक़बिल में कई मज़ामीन कि किताबों कि ज़रूरत है को क़लम बन्द करने से साफ़ हो जाती है। जब की हज़रत अक़दस मौलाना यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि मन्शा को बख़ूबी जानते थे। क्यों के आपने अपने एक मक़तूब तें अपनी इस मन्शा को ज़ाहिर कर दिया था। देखिये हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के मक़तूब का वो जुज़ जिस में आपने मुस्तक़बिल में क्या करना है इस को वाज़ेह किया है। स्कैन पेज कि कॉपी



स्कैन पेज का हिन्दी तर्जुमा देखें।

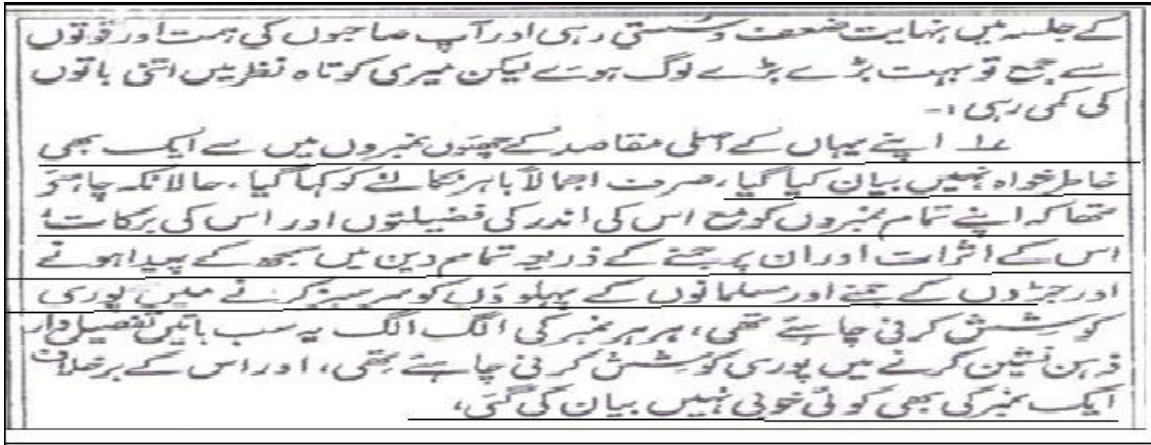
के क़यामत में काम देने के यकीन और ईमान के बक़दर वाबस्ता है। लेहाज़ा उस मजमूआ में मशगुल रहने कि सई को बहुत ज़यादा लाज़मी समझा जाए। तालीम व तआल्लुम के लिए बन्दाह नाचिज़ कि राय में मुबल्लिगीन और इमकिना ए तबलिग़ में उमूर ज़ेल कि किताबों का रच जाना बहुत ज़रूरी है। जुज़ ए आमाल रिसाला ए तबलीग़ चेहल हदीस शेखुल हदीस मौलाना ज़करिया साहब जो कूरआन शरीफ के बारे में हैं फज़ाईल ए नमाज़ फज़ाईल ज़िक्र हिकाया ए साहाबा इन सब कूतुब को असल बतोर मतन ठेहराकर उन ही मज़मीन कि और कूतुब तकमील कि जाएँ तो और बेहतर है। हक़ ताआला सहल फरमादे और कबूल फरमावें इन मज़मीन के ज़रिये जज़बात को परवाज़ देने के मातहत दायम दर्जा में फिर मसाईल को साथ साथ ज़म करदेना चाहिये हसबे ज़रूरत हर जगह के

इस ख़त का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर 18 पर देखिये।

इन सब बातों के मद्दे नज़र हज़रत अक़दस मौलाना यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने हयातुस्साहबा रज़िअल्लाहुअन और मुन्तख़ब अहादीसस लिखी ताके नहज इल्यासी कि तकमील हो

जाये अब में हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के चन्द खुतुत के इक़तेबासात पेश करता हूँ जिन से मालूम हो जायेगा के नज़र इल्यासी अपनी नहज में मुन्तख़ब अहादीस जैसी किताब चाहती थी।

एक मोके पर ईजतेमा ख़त्म हुआ तो हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने अहले इज्तेमा को ख़त लिखा के "चन्द कमियां रह गई मुझे अफ़सोस हुआ जिस को में नम्बरवार लिखता हूँ ताके आइन्दा ऐसा न हो, अपने यहाँ के असली मक़ासिद के छियों नम्बर में से एक भी खातिर ख़्वाह बयान नही किया गया, हालाँके चाहिए ये था के अपने तमाम नम्बरों को मय इसकी अन्दर कि फ़ज़ीलतों और इस कि बरकात..... को बयान किया जाता," (मकातिब/सफ़ा 130) स्कैन पेज देखें



स्कैन पेज का हिन्दी तर्जुमा देखें।

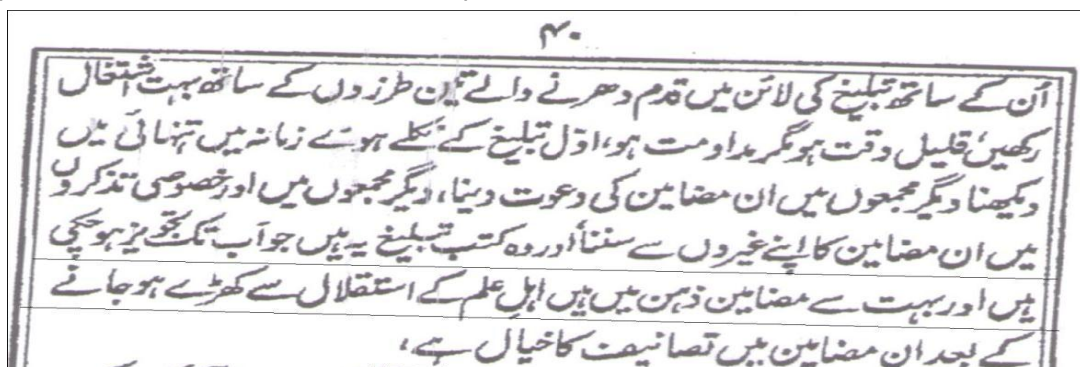
अपने यहाँ के असली मक़ासिद के छियों नम्बरों में से एक भी खातिर ख़्वाह बयान नही किया गया। सिर्फ़ इजमालन बाहर निकलने को कहा गया। हालाँके चाहिये था के अपने तमाम नम्बरों को मआ उस कि अन्दर कि फ़ज़ीलतों और उस कि बरकात उस के असरात और उन पर जमने के ज़रियेतमाम दीन में समझ पैदा होने और जड़ों के जमने और मुसलमानों के पेहलुओं को सर सबज करने में पूरी कोशिश करनी चाहिये थी हर हर नम्बर कि अलग अलग ये सब बातें तफ़सील वार ज़ेहन नशीन करने में पूरी कोशिश करनी चाहिये थी। और इस के बर खिलाफ़ एक नम्बर कि भी कोई ख़ूबी नही बयान कि गई।

इस मक़तूब का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर पर देखें।

हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि मन्शा थी के छे नम्बरों को ख़ूब बयान किया जाये और इन बातों को तफ़सीलवार ज़ेहन में बिठाई जाये इसी के मदेनज़र हज़रत अक़दस मौलाना यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़िक़्रो नहज इल्यासी का खयाल रख कर मुन्तख़ब अहादीस जो छः नम्बर पर ही है तसनीफ़ फरमाई। जिस में छे नम्बरों कि फ़ज़ीलतों, बरकात, मुकम्मल तफ़सील और ख़ुबियों के साथ क़लमबन्द किया है। ताके हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि मन्शा पूरी हो सके और आम व ख़ास हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहिकि मन्शा के मुताबिक़ इन पर जम सके।

- (1) अब सवाल यह है के इस कि तालीम भी हो के नही ? तो जवाब ज़ाहीर है के तालीम ही के लिये तो तसनीफ़ कि गई थी। अब बताईये के इस मेहनत में ज़्यादातर अमले में अक्सरियत कम ईल्म अवाम कि है वो छः नम्बर की फ़ज़ीलत आहादीस कि मुख़्तलिफ़ किताबों मसलन बुख़ारी, मुस्लिम, अबुदाऊद वगैरा से कैसे निकाल कर लाएगी ? इस लिए हज़रत अक़दस मौलाना यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने इस को मुस्तनद तौर पर मुस्तब कर दिया।
- (2) रहा मुन्तख़ब अहादीस कि तालीम तो इस कि दलील ये है के हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने एक बार तब्लीगी तालीम कि कुतुब कि फेहरिस्त बयान कि,

फरमाया: और कुतुब ए तबलीग ये हैं जो अब तक तजवीज हो चुके हैं, और बहुत से मजामीन ज़हन में हैं अहले इल्म के इस्कलाल से खड़े हो जाने के बाद इन मजामीन में तसनीफ का खयाल हैं। (मकातिब / सफा 40 खत नम्बर 5) स्कैन पेज देखें।



स्कैन पेज का हिन्दी तर्जुमा देखें।

उन के साथ तबलीग कि लाईन में कदम धरने वाले तीन तरजों के साथ बहुत इशतगाल रखें क़लील वक़्त हो मगर मदावमत हो। अबल तबलीग के निकले हुए ज़माने में तनहाई में देखना दिगर मजमों में इन मजामीन कि दअवत देना। दिगर मजमों में और खुसूसी तज़क्रों में इन मजामीन का अपने गैरों से सून्ना और वोह कुतुब तबलीग ये हैं जो अबतक तजविज़ होचु की हैं और बहुत से मजामीन ज़हन में हैं एहले ईल्म के इस्कलाल से खड़े होजाने के बाद उन मजामीन में तसनीफ का खयाल है।

इस मकतूब का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर पर देखें।

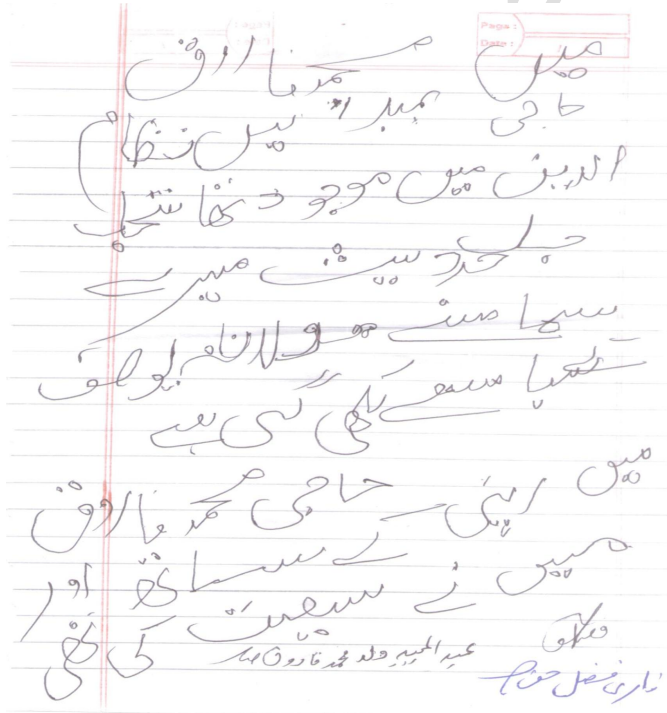
हज़रत अक़दस मौलाना यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने हज़रत अक़दस मौलाना इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि की इसी नहज और मन्शा का खयाल रखा था अब अगर हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम ने इस को तआलीम में ले लिया तो ये नहजे इल्यासी व नहजे युसुफी के तहत ही है। और ये कोई हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम कि मुस्तब करदा किताब तो नहीं है। बल्कि हज़रत अक़दस मौलाना यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि मुस्तब करदा किताब है। जो इस बात को लेकर शोर मचाया जा रहा है के हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम ने नई नई चीज़ को इजाद कर दिया है और काम को नहज से दूसरे रूख पर ले गये। अगर वो अपनी तहरीर करदा कोई किताब जो कि तबलीग़ कि मन्शा के खिलाफ होती तो हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम पर इलज़ाम सही करार पाता आखिर किताब तो हज़रत अक़दस मौलाना यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ही की है।

जो हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि कि उन्ही फिकरों जो आप के मकातिब में मौजूद है। इल्यासी नहज और मन्शा का खयाल रख कर लिखी गई है, ताकि अवाम मुस्तनद छः नम्बर सीख कर मज़बूत बात करने वाली बन जाएं और अवाम में मुस्तनद छः नम्बर आवें और इस कि फज़ीलत कि तालीम अवाम को मिले जैसा कि मौलाना ने अपने मकतूब में हिदायत फरमाई थी तो इस कि तालीम से तकलीफ क्यों हो रही है ? क्या अवाम व ख़वास सही और मुस्तनद बात जमातों में निकलने के ज़माने में और मुक़ाम पर भी मुस्तनद बात कर सकें तो इख़िलाफ करने वालों को तकलीफ क्यों हो रही है ? जब के इस में हज़रत अक़दस मौलाना यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के इसी नहज और मन्शा का खयाल रख कर लिखी थी। ताके इस से तालीम हासिल कर नहजे इल्यासी को मुकम्मल तौर पर कायम रखा जाये।

(1) बाज़ लोग यह इल्ज़ाम भी लगाते हैं के हज़रत अक़दस मौलाना यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने मुन्तख़ब अहादीस नहीं लिखी क्यों कि हमने मुन्तख़ब अहादीस का असली नुस्खा नहीं देखा। तुम्हारा देखना या नहीं देखना इस बात कि दलील नहीं बन सकती के मुन्तख़ब अहादीस हज़रत

अक़दस मौलाना युसुफ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने नहीं लिखी, सच तो यह है के मुन्तख़ब अहादीस हज़रत अक़दस मौलाना युसुफ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने ही लिखी है। इस की मज़बूत दलील ये है की जब हज़रत अक़दस मौलाना पीर जुल्फ़िकार साहब दामत बराकातुहुम आलमी मर्कज़ बंगले वाली मस्जिद मदरसा काशिफुल उलुम बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन अवलीया नई देहली इंडिया तशरीफ लाए तो मुन्तख़ब अहादीस का पुराना असली नुस्खा उन को दिखाया गया था, हज़रत अक़दस मौलाना पीर जुल्फ़िकार साहब दामत बराकातुहुम ने उस को चूमा भी था, उस की तफ़सील उस वक़्त अल फ़ुरक़ान में छपी थी आज आप देख सकते हैं।

- (2) सब से मज़बूत दलील यह है के हाजी फारूक साहब उज्जैन मध्य प्रदेश जो हज़रत अक़दस मौलाना युसुफ साहब रहमतुल्लाह अलैहि के ख़ास अहबाब में से ऐक हैं और आज भी मौजूद हैं जो अक़दस हज़रत अक़दस मौलाना युसुफ साहब रहमतुल्लाह अलैहि के पास रहते थे जब हमने हाजी फारूक साहब उज्जैन वालों से मालूमात कि के मुन्तख़ब अहादीस हज़रत अक़दस मौलाना युसुफ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने लिखी है तो फरमाया "हाँ " हमने उन कि इस बात को क़लम बन्द करना चाहा कि आप बोलें हम लिख लेते हैं तो फरमाया नहीं ये बात में लिख कर देता हूँ और शदीद बिमारी और बुज़ूरगी के आलम में कांपते हाथों से उनहोंने खुद क़लम बन्द कर अपने दस्तखत किये कि मुन्तख़ब अहादीस हज़रत अक़दस मौलाना युसुफ साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने लिखी है। देखें हाजी फारूक साहब उज्जैन वालों कि तहरीर कि स्कैन कापी।



میں ہجی فاروق

میں نیجامزددین میں موجود تھا مونتخبب اہادیس میرے سامنے مولانا یوسف صاحب نے لکھی گئی ہے۔

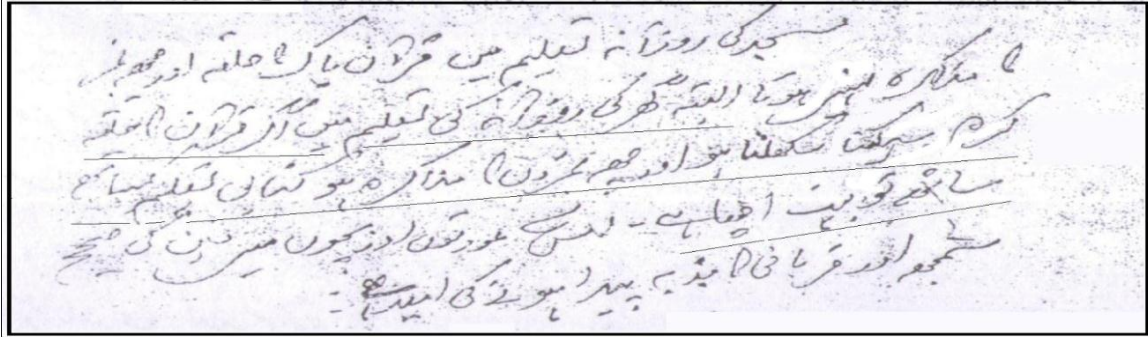
گواہ :- کاشی فزّالہ ہکّہ زجّین

ابّدول مّجید

ابّدول لّتیف

- 4) चौथा इलज़ाम ये लगाया जा रहा है के घर कि तअलीम में सीखना सिखाना नहज इल्यासी से हटा हुआ है।

इसी तरह घर कि तआलीम में कुरआन के सीखने सिखाने और छे सिफात के मुज़ाकरे और किताब कि तालीम को भी हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम कि तरफ मन्सूब कर के नहज से हटने कि बात चलायी गई लेकिन हज़रत अक़दस मौलाना इनामुलहसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि का खत जो भाई मोहसिन ने तहरीर किया था उस में यह तमाम बातें घर कि तालीम के मुतालिक तहरीर कि गई हैं। स्कैन पेज देखें।



स्कैन पेज का हिन्दी तर्जुमा देखें।

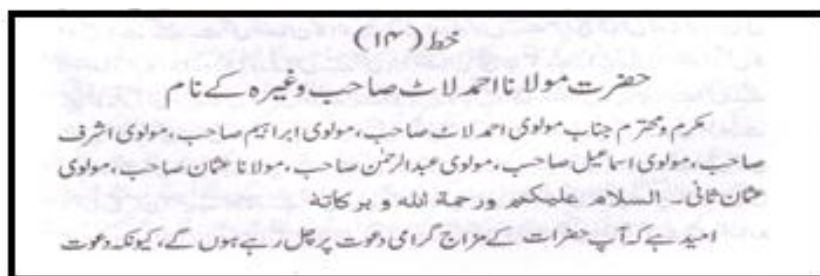
मस्जिद कि रोज़ाना तालीम में कुरआन पाक का हल्का और छे नम्बरों का मुज़ाकरा नही होता अलबत्ता घर कि रोज़ाना कि तालीम में अगर कुरआन का हल्का करें सिखना सिखाना हो और छे नम्बरों का मुज़ाक्रा हो किताबी तालीम के साथ साथ तो बहुत अच्छा है। उस से औरतों और बच्चों में दीन कि सहीह समझ और कुरबानी का जज़बा पेदा हाने कि उम्मीद है।

इस मकतूब का मुकम्मल स्कैन पेज नम्बर पर देखें।

इस तहरीर से हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम कि ज़बरदस्त तरदीद करती है इस तहरीर की कापी भी साथ में स्कैन कर दी गई है ताकी ज़ेहन इस वसवसे से आज़ाद हो यह तहरीर भी बक़लम मोहसीन साहब ही है। जिनहों ने गुजरात वालों के पर्चे पर यह कह कर दस्तखत किये के हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद सअद साहब दामत बराकातुहुम बग़ैर मशवरे के अपनी तरफ़ से यह बात चला रहे है।

इस से यह वाज़ेह हो जाता है कि यह तमाम इल्ज़ामात बे बुनियाद हैं और किसी नफ़सानी खुवहीशात व तआसुब कि बिना पर घढ़ कर अपनी मनवाने और दअवत के काम को अपना गुलाम बनाए रखने के किया हो सकता है। ऐसा लगता है इस अजीम काम कि इजतिमाइयत को मुन्तशीर करने कि एक साज़िश भर है। जो दीन और काम के मुख़ालिफ़ों को सिर्फ और सिर्फ तक्वियत पहु चाने के और कुछ नही है।

यहाँ पर इन तमाम इल्ज़ामात के पैश नज़र अब एक बात याद दिलाना चाहता हूँ के हज़रत अक़दस मौलाना सईद अहमद ख़ान साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने मकतुब जो मकातीब हज़रत मौलाना सईद अहमद ख़ान मुहाजीर मक्की हिस्सा अव्वल सफा 42 ता 44 ने अपने ख़त नम्बर 14 में मौलवी अहमद लाट साहब मौलवी ईब्राहीम साहब मौलवी अशरफ साहब मौलवी ईसमाईल साहब मौलवी अब्दूल रहमान साहब मौलाना उस्मान साहब मौलवी उस्मान सानी साहब और चन्द अहले गुजरात के नाम एक ख़त में लिखा था।



سکین کا پی

کے اس راہ میں چلنے والے پر ان غاٹیوں میں سے ایک غاٹی یہ بھی اُتی ہے کہ آپس کے مخالفت اور مشاجرات پیش آئیں۔ اس میں شیطان مامورین کو امیر سے بدظن کر دیتا ہے اور وہ امیر کی ڈانٹ ڈپٹ جو مامورین کے لئے اصلاح کا سبب بنتی ہے وہ عداوت کا سبب بنتی ہے جس سے کام سے محرومی کے اسباب پیدا ہوتے ہیں کیونکہ امیر سے بدظنی سخت جرم ہے اور بڑا گناہ۔ وہ احادیث اٹھا کر پڑھیں جن میں امیر اطاعت کی اہمیت بتلائی گئی ہے اور یہاں تک آخری جملہ ملتا کہ کفر صریح سے پہلے اطاعت واجب راقی ہے۔ کفر ابواحا کا جملہ حدیثوں میں موجود ہے کیونکہ امیر کی اطاعت کے بغیر اجتماع ناممکن ہے اور یہ امت اجتماعیت پر ہی دشمنوں پر غالب رہے گی اور جب اختلاف بڑھ جائے گا تو حق پر ہونے کے باوجود دشمن پر غالب نہیں آسکتی، اس کے شواہد حدیثوں میں اور تاریخ صحابہ میں بکثرت ملیں گے۔ نیز جو بات ہمارے لئے ضروری ہے وہ یہ ہے کہ اس کام میں ترقی اپنی تقصیرات پر نظر کرتے ہوئے طلب کو بڑھانے میں ہے، اگر تقصیرات

مکاتیب حصہ اول صفحہ 43
ان گھاٹیوں میں سے ایک گھاٹی یہ بھی آتی ہے کہ آپس کے مخالفت اور مشاجرات پیش آئیں۔ اس میں شیطان مامورین کو امیر سے بدظن کر دیتا ہے اور وہ امیر کی ڈانٹ ڈپٹ جو مامورین کے لئے اصلاح کا سبب بنتی ہے وہ عداوت کا سبب بنتی ہے جس سے کام سے محرومی کے اسباب پیدا ہوتے ہیں کیونکہ امیر سے بدظنی سخت جرم ہے اور بڑا گناہ۔ وہ احادیث اٹھا کر پڑھیں جن میں امیر اطاعت کی اہمیت بتلائی گئی ہے اور یہاں تک آخری جملہ ملتا کہ کفر صریح سے پہلے اطاعت واجب راقی ہے۔ کفر ابواحا کا جملہ حدیثوں میں موجود ہے کیونکہ امیر کی اطاعت کے بغیر اجتماع ناممکن ہے اور یہ امت اجتماعیت پر ہی دشمنوں پر غالب رہے گی اور جب اختلاف بڑھ جائے گا تو حق پر ہونے کے باوجود دشمن پر غالب نہیں آسکتی، اس کے شواہد حدیثوں میں اور تاریخ صحابہ میں بکثرت ملیں گے۔ نیز جو بات ہمارے لئے ضروری ہے وہ یہ ہے کہ اس کام میں ترقی اپنی تقصیرات پر نظر کرتے ہوئے طلب کو بڑھانے میں ہے، اگر تقصیرات

سکین کا پی

لےکین اس سورتے حال میں کام کا اور کام کرنے والوں کے تھپفوج کا یکینی راستا یہ ہے کہ ہر آدمی مشورے میں اپنی بات اور اپنا خیال یا اپنے دل کی بات مشورے میں رکھ کر فاریگ ہو جاے اور اپنی رای پر اممل ن ہونے کی سورت میں خوش ہو اور اپنی رای پر فےسلا ہو جانے پر دل سے گمگین ہو یہ उसूल تبلیگ کا بھی ہے اور آفییات کا جّامین بھی ہے۔ اور अगर اس میں بے उसولی کی गई तो बदगुमानी गीबत झूट और बुहतान तराशी तक मोहलीकात में पड़ जाने को बड़ा खतरा है और इस से भी ज़्यादा खतरनाक ये है कि हम सही कर रहे हैं इसी गुमान में हम काम से दूर हो जाएं। अल्लाह हम सबकी हिफाज़त فرमाए।

(وہم یحسبون اہم یحسنون صنعاً)

و آخیر داوانا انیل ہمدو لیللاہی ربیلآلامین



مہممد ابدو شکور خان
ہندویری

18 جیلہجج 1437 ہجری
21 سیتمبر 2016

1

از نظام الدین دہلی

مکرم محترم الحافظ الحاج مولانا القاری محطیب صاحب متعنا اللہ
بطول جیاتکم الطیبہ و افاض علینا فیضکم السردیہ و اگر فیکم اللہ کما اکر متمونا
بالذات القدیۃ -

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ،

حضرت عالی! کوئی کام بغیر کسی اصول اور بنائے نہیں چلتا، اس وقت یہ
تبلیغ اس قدر عظیم الشان کام ہونے کو پہنچ گیا ہے کہ اس کی تفصیلات ظاہریہ و
باطنیہ اصولیہ و فروعیہ اس قدر کثیر اور وافر ہیں کہ وہ بیانات و تحریر یا غور کر کے فہم کے
احاطہ سے بہت بالاتر ہو چکی اور جیسا کہ میں شروع میں عرض کر چکا ہوں یہ سب تفصیلاً
بہر حال بناؤں پر چل رہی ہیں، ان بناء امور پر کسی آدمی کو دفعتاً چلانا بہت دشوار ہے
اس لیے میرے نزدیک جو کام چلنے کے لیے اس وقت ضرورت ہے وہ مشائخ طریقت
علمائے شریعت ماہرین سیاست کے چند ایسے حضرات کی جماعت کے مشوروں کے ماتحت
ہونے کی ضرورت ہے جو ایک نظم کے ساتھ حسب ضرورت مشاورت کا انعقاد خاطر خواہ
مدام رہے اور عملی چیز سب اسکے ماتحت ہو سو ایک تو اول ایسی مجلس کے منعقد ہو جانے کی
ضرورت ہے اور دوسرے اس وقت جو امت محمدیہ کے امراض کہنہ میں سے ہے وہ
عملی چیزوں کا بے محل اور بے ضرورت تقریر کی کثرت پر اکتفا ہے اور اسکے بالمقابل
قول پر عمل بڑھنے کی ضرورت ہے لہذا آگے جو تبلیغ میں کوشش کرے وہ اس تبلیغ
کے میدان میں نکل چلنے والوں کے ساتھ زندگی گزارے اس وقت مولانا کی تشریف
آوری سے دہلی والوں نے تبلیغ سے وحشت کے بجائے اس کا اثر لیا ہے اور کاخیر
سے انس پیدا ہو جانے کی ابتداء یہ بہت اچھی علامت ہے، اس لیے اگر
جناب عالی جملہ مبلغین کو میوات پہنچادیں اور کم سے کم مولوی عبدالجبار کو
پہنچائیں تو امر ثانی کے لیے معین و مدد معلوم ہوتا ہے۔

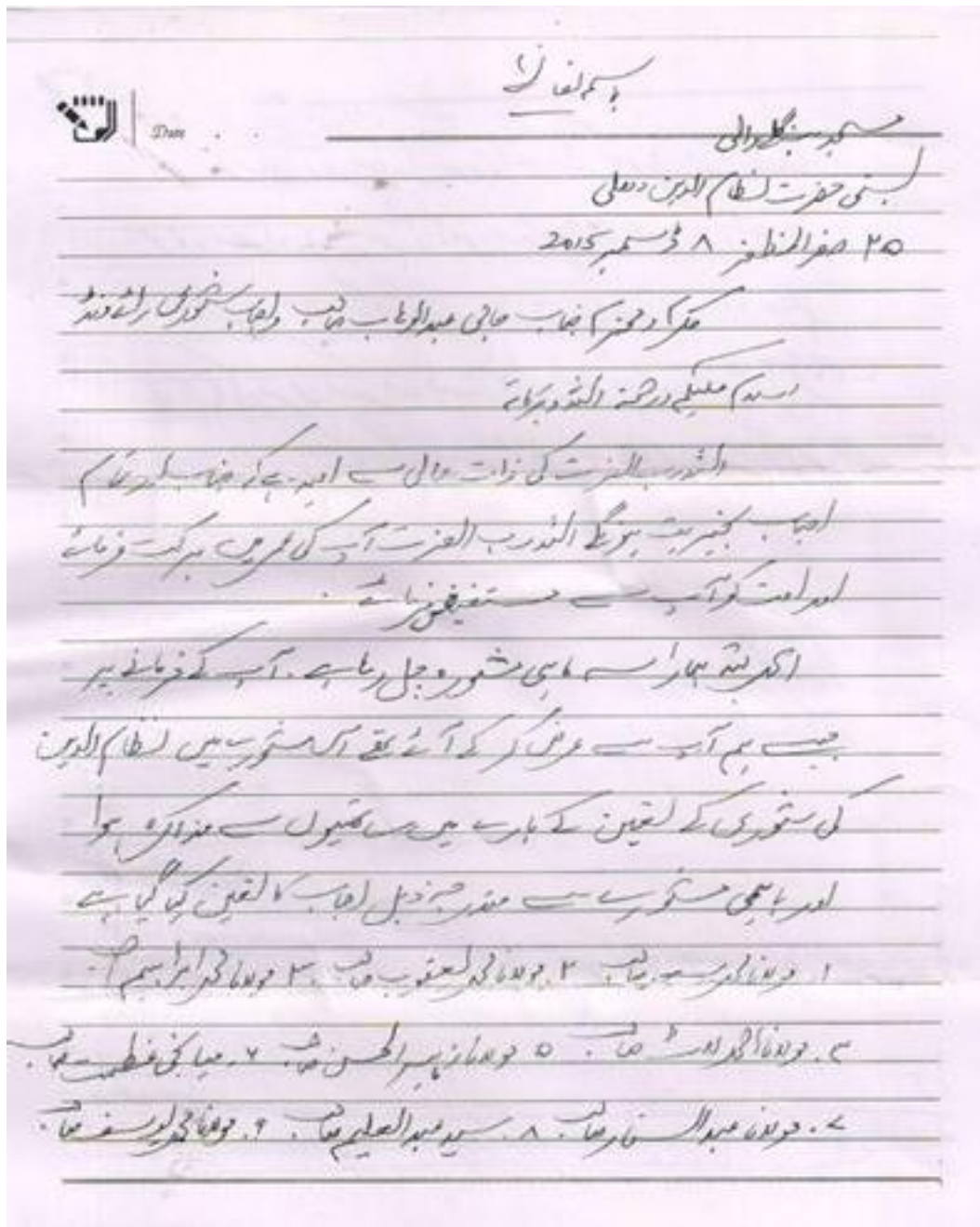
1

عنایت فرمایم جناب الحاج مولوی محمد طیب صاحب سلمہ اللہ
 السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ،
 بحمد اللہ جمعرات میں رات دن کی سہی کے بعد ڈھائی سوتین سو کے
 قریب مکتب قائم ہو گئے ہیں۔
 دوسرے لوگ ایک بہت بڑے جلسے کی تیاری کر رہے ہیں اور
 مناظرہ کی تیاری میں کافی سے کافی مشغول ہیں۔ اول تو وہ لوگ
 بلا مناظرہ ہی کے ورنہ جناب ۱۵ سوال کی تاریخوں میں اپنے
 آدمیوں کو لے کر شیخ رشید احمد صاحب کے یہاں تشریف لے آویں
 وہاں پھر اسٹیشن پر آپ صاحبان کے لیے انشاء اللہ سب انتظام
 موجود ملے گا۔

بندۂ ناچیز محمد الیاس عفی عنہ

ہجرت مولانا ساد ساہب دامت بركاتوہم کا مکاتوب

جب 8 ديسبر 2015 کو شریا بن गई तो रायविंड/ काकरेल खबर दी गई और इस खत को जो हज़رت मौलانا ساد ساہب دامت بركاتوہم کی طرف سے लिखा गया ये खत भाई फ़ारूक बंगलौर ने खुद अपने कलम से लिखा और इस पर دستखत किये साथ ही हज़رت मौलانا इब्राहीम साहब दامت بركاتوہم हज़رت मौलانا अहमद लाट साहब दامت बركاتوہम व सईद अब्दुल अलीम साहब ने भी इस खत पर دستखत किये हैं । अब वापेल किस बात का अल्लाह हिफ़ाज़त फरमाये





آپ کے یہاں اگر تھرا ہے تو میں لوگوں کی سبھی سبھی
موجود ہے اور اب ہم نے اپنی سبھی سبھی کے لیے
دعا کرتے ہیں کہ اللہ رب العزت اسے سارے عالم
کا کام کی سبھی سبھی کا ذریعہ بنائے۔ آمین
اور سارے عالم کے لیے سبھی سبھی بنائے۔ آمین

مولانا ساد ساہب دامت برکاتہم کا وہ خط جو دیگر مومالیک کو لکھے गए جिसमें शूरा का जिक्र हैं

از نبی مکرم والی مسجد
بستی حضرت نظام الدین
شہی دہلی

باسمہ تعالیٰ

مکرمین و محترمین احباب مشوہ اکرام و کینڈا دفعتاً اللہ و ابراہیم لما یجب و یصلی
السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

امید ہے کہ مزاج گہرائی بخیر و عافیت ہوں گے اور دین کی عالی محنت میں سعی و مشغول ہوں گے
اللہ جل شانہ آپ حضرات کے علم و عمل میں برکت عطا فرمائے اور ساری امت کو معرفت کی عالی محنت
پر مجتمع فرمائیں۔ اللہ جل شانہ کا فضل و احسان ہے کہ آپ کو اس نبوی محنت میں چلایا ہے اور
جہاں عین بنائے عالم کے نور کو شہ میں پہنچایا ہے۔ یہ سب محض اللہ سبحانہ و تعالیٰ کا فضل ہے چھڑائی
ہے ورنہ ہم کیا ہیں کون ہیں ہم خوب جانتے ہیں

لہذا یہ محنت ترقی و تربیت کیلئے اس بات کی متقاضی ہے کہ اس کو پہچ نبوی پر کیا جائے کیونکہ
سیرت نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام اور سیرت صحابہ ہی ہر دور اور ہر وقت کی وہ مثال راہ ہیں جن کے ذریعہ
انسان ہر قسم کی ظلمات میں راہ حق حاصل کر سکتا ہے اور اسی راہ میں ہر انفرادی اور اجتماعی مسئلہ کا حل
اس محنت میں چھٹنا ہے یقین بننا چاہئے کہ اللہ تعالیٰ وہ نصرت فرمائے جائیں گے جو دور نبوی اور در صحابہ میں
اس لئے محنت کو کرتا بھی ہے اور سمجھتا بھی ہے، محنت میں جس قدر ہم اصلی اور اجتماعی سے چڑیں گے اللہ تعالیٰ
محنت میں برکت عطا فرمائے چھٹ جائیں گے اور آپس کی اجتماعیت اور مرکزیت کی بنیاد پر بننے والی نصرتیں ظاہر فرمائیں گے
اللہ تعالیٰ کی نصرتیں اور غیبی تاہیدات کو شامل حال کرنے کیلئے اجتماعیت اور مرکزیت شرط ہے جس کو حضرت
مولانا الیاسؒ فرمایا کرتے تھے کہ
اگر تم سارے انفرادی اعمال عبادات، ذکر اور تلاوت سارے کے سارے کاموں
کو پہنچ جائیں اور قبول ہو جائیں لیکن تم میں آپس میں جڑ نہ ہوئے ہے تو اللہ تعالیٰ نصرت و مدد نہیں آئے گی اسی کو

حضرت مولانا یوسف رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا: میری قوم اور میرا علاقہ اور میری برادری پر سب امت کو ٹوڑنے والی باتیں ہیں اور اللہ تعالیٰ کو پر باتیں اتنی ناپسند ہیں کہ حضرت سعد بن عبادہ رضی اللہ عنہ جیسے بڑے صحابی سے بھی اس بارہ میں جرح غلطی ہوئی (جرا ردب نہئی ہوئی تو اس کے نتیجہ میں انصار و ملاحرین میں تفریق ہو جاتی) اسکا نتیجہ حضرت سعد رضی اللہ عنہ کو دنیا ہی میں دیکھنا پڑا روایات میں ہے کہ ان کو جہنم کے قتل کر دیا اور مدینہ منورہ پر آواز سنائی دی اور بولنے والا کوئی نظر نہ آیا =

قتلنا سید الخرج سعد بن عبادہ
رمیناہ بسر ہم فلم یخط فؤادہ

اس واقعہ نے شمالِ قحطیٰ اور لڑی امت اور قیامت کے دنوں کو سب دیا کراچی سے اچھا آدمی بھی آخر قیامت یا علامہ کی بنیاد پر امت کو ٹوڑے گا تو اللہ تعالیٰ اسکو ٹوڑ کر رکھ دے گا اسی کے اللہ نے فرمایا ہے کہ: ولا تفرقوا فتنوا و تذهب ریحکم ۱۰۰؎
لہذا جس قدر ہم اصل اور عزت کو مضبوط کریں گے امت میں اجتماعیت پیدا ہوگی اور کام نہ رہی کریگا۔ مولانا یوسفؒ فرماتے تھے اگر ہر دو ماہ ہر نظام الدین نہ آئے رہے تو اپنی اپنی کچھ لکے الحمد للہ اسی فکر کی ایک کڑی آپ حضرات کی ہر دو سال میں منظم والی مسجد نظام الدین کی آمد راتینور اور منظم دین کا اجتماع ہے۔ اللہ سبحانہ و تعالیٰ آئمہ ماہ مارچ ۱۹۸۱ء میں بھی آپ حضرات کی آمد کو قبول فرمائے اور آسان فرمائے اور اپنی محنت میں اللہ سے اچھی امید بھی رکھیں اور نماز شہ پر کہ اللہ تعالیٰ سے دعائیں کریں اللہ سبحانہ و تعالیٰ اس محنت کی حقیقت و بصیرت ہم کو عطا فرمائے۔

نصط والسلام
بندہ کرم محمد کرم
ماہل شوری

۲۳ شوال المکرم ۱۴۰۲ھ
۳۱ جولائی ۲۰۱۶ء

بسمِ جان و تالی

مسند سرسبز راتہ ورتہ
۲۱ رمضان ۱۴۳۶ھ

مسکرمین و عترتین بندہ جناب مولیٰ محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مولیٰ محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
مولیٰ احمد راشد مولیٰ محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مولیٰ محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ! ایدہیکہ آپ سب دعوت، بجز وعایت ہیں گے۔ اور شب و روز
دین مالی کی منت میں مشغول ہوتے ہوئے اُمت کیلئے نیک نیت و دعا گو ہیں گے۔ اللہ تعالیٰ آپ
حضرات کی ساری چیزیں قبول فرما کر سارے عالم کیلئے ہدایت کا فیصلہ فرمادے آمین!
مسکرمین بندہ! ہم ایک اُمت بنا رہے ہیں کسی قوم کا مسئلہ نہیں ہے۔ اس بنا پر دعوت جی مولانا
محمد یوسف صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے بیان کے ساتھ جرتین تحریریں بھیجی ہیں۔ سہ ماہی مشورہ کیلئے آتے
والے مجھے کو سننا اُستثنائی مفید ہوگا۔ ان تحریروں کو ٹرہنے اور سننے سے اُمت بنا پیدا ہو کر ہم کام میں
ترقی کرتے دے ہیں گے۔

جہاں تک عالمی شہرت کی بات ہے نہ کسی تحریر میں عالمی کا لفظ ہے اور نہ ہی عالمی کا
لفظ استعمال کیا ہے۔ یہ تو دعوت جی مولانا امام الحسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی بنائی ہوئی شہرت کی کمی ہو رہی ہے۔
موجودہ مصنف، ^{۱۴۳۶ھ} ۱۴۳۶ھ اور قبلہ آپ پانچوں مسئلہ والی مسجد میں اکٹھے ہیں۔ اس بنا پر جو کچھ بھی کریں، آپ میں
عمل دلی کو مشاوری سے کریں اور جس قدر آپ کے جوڑ و لغبت سے اور مشاوری سے کام کریں گے۔ ساری
اُمت آپ سب سے بڑی چلی جائے گی۔ اور اس طرح افتراق و انتشار کی ساری شکلیں ختم ہو کر اجتماعیت
اور اُمت ہے کی تمام شکلیں وجود میں آئیں گی اور واعظہوا بحبل اللہ جمیعاً پر جو اللہ کی مدد و دعوت ہے۔
وہ شامل حال ہو کر عالم ہو کیلئے رشد و ہدایت کا فیصلہ ہوگا۔ انشاء اللہ تعالیٰ! نفس کی خواہشات سے بالاتر
ہو کر ایک دوسرے کی محبت دلی میں رکھتے ہوئے ایک دوسرے کو سبھتے ہوئے ایک دوسرے کیلئے دعا کرتے رہیں۔
اللہ تعالیٰ ہم سب کی غلطیوں کو معاف فرما کر اس مالی منت کیلئے قبول فرمालے۔
تمام اجاب کی خدمت میں سلام سنوئے عرض ہے اور دعاؤں کی درخواست ہے۔
فقط بندہ محمد عبدالوہاب عفی عنہ

بسم اللہ تعالیٰ

مگر اس وقت میری عمر میں دیکر میں حضرات علماء کرام و اہل علم و اہل کرام
السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ
بہت احترام دیکر ان سے عرض کیا کہ حضرات علماء کرام کے پیش کردہ خط میں عالمی شہرت کے
بارے میں جو کچھ لکھا گیا ہے اس کی حقیقت اور حقیقت ذیل ہے۔
خط میں گذشتہ ۱۰ نومبر ۱۹۷۷ء کے خط کے تحت جس میں عالمی شہرت کے بارے میں جو کچھ لکھا گیا
اس کا واقعہ ہے کہ اس وقت نظام الدین اور رائے دھند کے ہندو گروں کے دستخط بہت جلد عالمی شہرت کی
توجہ نہ ہوئی تھی اس میں نظام الدین کے دیگر پیرو گروں کے دستخط نیز بہت دیر کے جواب میں کے لیے خط
موجود نہ ہونے کے برابر مکمل طور پر لٹے نہیں ہوئے تھے۔ اس لیے اس خط کا لفظ صحیح نہیں ہے۔
حقیقت الامر یہ ہے کہ حضرت جی حضرت مولانا دھرم داس صاحب دھرم داس صاحب دھرم داس صاحب
مستقل شہرت میں تھے اب دوسری بات یہ ہے کہ حضرت عالمی علیہ الرحمہ وکرم اللہ وجہہ
دائم برکاتہم وکرم اللہ وجہہ تمام اہل شہرت کے معتقد ہونا ضروری ہے جو خط کے لیے شدہ بات ہے۔
(جس کی تحریر و نقل و نقل کے ساتھ منسلک ہے) لیکن افسوس کی بات یہ ہے کہ مذکورہ دونوں حضرات کے انتقال
سے پہلے ہی عالمی شہرت کی رسم مجوزہ تحریر کو مختلف حیثیات کے ذریعہ دنیا بھر میں شائع کر دیا گیا۔ مزید یہ کہ
رائے دھند کے اس اجتماع میں بہت دیر کے جواب میں موجود تھے انہوں نے اس خط کے بارے میں جواب دیا کہ
دستخط کے بارے میں خود راہی سے پوچھا تو انہوں نے ان الفاظ سے کہ "میری کچھ نہیں مسلمانوں کی طرح
اس نام کا ذمہ دار ہے" اپنے دستخط کا انکار کر دیا۔ اب اس جیسی مشتبہ چیز پر کلام و اعتقاد کا کیا
سکتا ہے؟ اور کیسے قابل قبول ہو سکتا ہے۔
لہذا درخواست ہے کہ خط میں لکھے شدہ عالمی شہرت کے بجائے مجوزہ عالمی شہرت لکھا جائے تاکہ بات کی
صححت میں کوئی شک نہ رہے۔

منہاج احباب شہرہ دار اہل شہرت
دستخط خان صاحب کدین نسیم صاحب

ہجرت مولانا اعلیٰ میاں ابوالحسن علی ندوی صاحب رےھ. کا رخت جسمة آپنے آپنے
پاکستان جاکر مشورہ کرنے سے منا کیا اور इसके نुकسان کو भी लिखा मगर ये
लोग उलमाए हक की कब मानते हैं वही किया जिसका डर मौलانا अलीमियां रेھ. ने लिखा था
और अब हालात आये हैं इनही लोगों की वजह से।

377-A

بسم الله الرحمن الرحيم

ندوة العلماء
لکھنؤ، الهندابوالحسن علی حسینی ندوی
Abul Hasan Ali Nadwi

حضرت ارکان شوریٰ جماعت تبلیغ مرکز نظام الدین جمع اللہ کلہم والتمس فی تلویحہم ووقفہم لما یحب ویرثی
السم علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

تبلیغی دعوت اور جدوجہد کی جواہریت و عظمت دل میں ہے اور اس کے جواہرات خود اپنی ذات
پر ہیں، پھر اس کو اس عہد میں عالم اسلام میں جو مقبولیت عطا شدہ و عند الخلق حاصل ہے اور اس کے جواہرات
وبرکات عینی مشاہدہ و تجربہ میں ہیں اس کی بنا پر ایک اضطراری حالت میں لیکن توینق الہی سے بہت ادب
کے ساتھ دو باتیں عرض کرنے پر اضطراراً و اختیاراً لکھی جا رہی ہیں۔

(۱) ایک تو یہ کہ ہر قیمت پر اور ہر ایشارہ و تقریرائی کر کے ارکان شوریٰ اور ذمہ داران جماعت میں کا انتخاب
حضرت جی رحمۃ اللہ علیہ کی وفات پر ہوا وحدت و اتفاق قائم رکھیں چاہے اس کی جو بھی قیمت ادا کرنی پڑے، اس وقت
ساری دنیا کی نگاہیں محسن و اعداؤ سب کی اس ہر لگی ہوئی ہیں، محبین و مخلصین بھی چاہتے ہیں کہ اس وحدت میں
فرا بھی رخت نہ پڑے اور شہادت اعداؤ کو کوئی موقع نہ ملے، شیطان بھی تک میں ہے اور حاسدین و سائنیں بھی کہ
کسی طرح اس شیرازہ میں رخت نہ پڑ جائے، اور محبین و مخلصین کی دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ یہ وفاق و تعاون قائم رکھے

(۲) دوسری اہم بات یہ ہے جو تجربہ و بصیرت حالات سے واقفیت اور پورے خلوص و اتحاد کے ساتھ
لکھی جا رہی ہے کہ اب امارت یا وفاق کے بارے میں جو فیصلہ کریں وہ دہلی اور مرکز نظام الدین ہی میں ہو، اسکے لئے ہرگز
پاکستان کا سفر نہ کریں اور نہ وہاں اسکے بارے میں کوئی فیصلہ اور تنظیم ہو، ایک تجربہ کار اور تعمیری سیاسی اور تاریخی بصیرت
رکھنے والے انسان کی حیثیت سے لکھا جاتا ہے کہ پھر ہندوستان میں ہی نہیں سارے عالم میں مکمل ہو جائے گا، یہاں
وہ ایک پاکستانی تحریک قرار پائے گی اور وہاں اس سے سیاسی اور جماعتی فوائد حاصل کئے جائیں گے اور
پھر بڑھنے والی مسجد میں جو اللہ کی نعمت و روحانیت ہے وہ کہیں نہیں ملے گی۔

یہ دونوں باتیں اور محقائق نری مجبوری سے اپنا دینی فریضہ اور قدم تعلق کا تقاضہ سمجھ کر لکھی جا رہی
ہیں۔ والغیب عند اللہ تعالیٰ۔

مخلص و دعاگو

ابوالحسن علی ندوی

حضرت مولانا علی میاں ابوالحسن علی ندوی صاحب کا خط جنہیں آپ نے پاکستان جاکر مشورہ کرنے سے منع کیا اور اسکے نقصان کو بھی لکھا مگر یہ لوگ علما حق کی کب ماننے ہیں وہی کیا جاکار مولانا علی میاں نے لکھا تھا اور اب حالات
آئے ہیں ان ہی لوگوں کی وجہ سے۔

مولانا یوسفؒ ساہب رھ. کا مکاتیب

مکاتیب حضرت جی ۱۴۰
حصہ اول

خط نمبر ۱

حجاز مقدس جانے والی جماعت کے نام ایک تفصیلی خط
جس میں تبلیغ کا مقصد، اصول، کام کرنے کا طریقہ، اس راستہ
کی برکات و ہدایات تحریر کی گئیں

۷۸۶

محرمین و کرمین زندہ زادنا اللہ و ایک کم جہد اوسعیٰ فی سبیلہ
والہمنا وایاکم مرشد امورنا السلام علیکم ورحمتہ اللہ و
برکاتہ۔

خداوند کریم سے امید ہے کہ آپ حضرات بعافیت ہوں گے۔ آپ حضرات کی دینی
مساعی کی اطلاعات باعث مسرت اور باعث تقویت ہوتی ہیں۔ اللہ جل شانہ قبول
فرمائیں، ترقیات عطا فرمائیں۔ آمین۔

اللہ رب العزت جل جلالہ و عم لوا لسنہ انسانوں کی تمام کامیابیوں کا دار و مدار
انسان کے اندرونی مایہ پر رکھا ہے۔ کامیابی اور ناکامی انسان کے اندر کے حال کا نام
ہے۔ باہر کی چیزوں کے نقشے کا نام کامیابی و ناکامی نہیں، عزت و ذلت، آرام و
تکلیف، سکون و پریشانی، صحت و بیماری، انسان کے اندر کے حالات کا نام ہے۔
ان حالات کے بننے یا گرنے کا باہر کے نقشوں سے تعلق بھی نہیں، اللہ جل شانہ ملک و
مال کے ساتھ انسان کو ذلیل کر کے دکھا دیں اور فقر کے نقشے میں عزت دے کر دکھا دیں،
انسان کے اندر کی مایہ اس کا یقین اور اس کے اعمال ہیں، اور انسان کے اندر کا یقین اور

idara

مکاتیب

حضرت جی مولوی محمد یوسفؒ صاحب



مرتب
(مولوی مفتی) محمد روشن شاہ قاسمی
مہتمم مدرسہ حیات العلوم سنوری ڈسٹرکٹ اکلہ (مہاراشٹر)

فرماتے۔

ان چیزوں سے مناسبت پیدا کرنے کے لیے ہر شخص سے خواہ کسی شعبہ سے متعلق ہو چار ماہ کا مطالبہ کیا جاتا ہے، اپنے مشاغل، ساز و سامان اور گھر بار سے نکل کر ان چیزوں کی دعوت دیتے ہوئے اور خود مشق کرتے ہوئے ملک بہ ملک، اقلیم بہ اقلیم، قوم بہ قوم، قریہ بہ قریہ پھرنیکے حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے ہر امتی کو مسجد والا بنایا تھا، مسجد کے کچھ مخصوص اعمال دیئے تھے۔ ان اعمال سے مسلمانوں کا زندگی میں امتیاز تھا، مسجد میں اللہ کی بڑائی کی، ایمان کی اور آخرت کی باتیں ہوتی تھیں، اعمال سے زندگی بننے کی باتیں ہوتی تھیں، عملوں کے ٹھیک کرنے کے لیے تعلیمیں ہوتی تھیں۔ ایمان و عمل صلح کی دعوت کے لیے ملکوں اور علاقوں میں جانے کی تشکیلیں بھی مسجد سے ہی ہوتی تھیں۔ اللہ کے ذکر کی مجلسیں مسجدوں میں ہوتی تھیں۔ یہاں تعاون، ایثار، ہمدردیوں کے اعمال ہوتے تھے۔ ہر شخص حاکم محکوم، مالدار، غریب، تاجر، زارع مزدور، مسجد میں آکر زندگی سیکھتا تھا اور باہر جا کر اپنے اپنے شعبہ میں مسجد والے تاثر سے چلتا تھا۔

آج ہم دھوکے میں پڑ گئے کہ ہمارے پیسے سے مسجد چلتی ہے، مسجد میں اعمال سے خالی ہو گئیں اور چیزوں سے بھر گئیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے مسجد کو بازار والوں کے تابع نہیں کیا حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی مسجد میں نہ بجلی تھی نہ پانی تھا، نہ غسل خانے تھے، خرچ کی کوئی شکل نہ تھی۔ مسجد میں اگر داعی بنتا تھا، معلم اور متعلم بنتا تھا، ذاکر بنتا تھا، نمازی بنتا تھا، مطیع بنتا تھا متقی زاہد بنتا تھا، خلیق بنتا تھا۔ باہر جا کر ٹھیک زندگی گزارتا تھا۔ مسجد بازار والوں کو چلاتی تھی۔ ان چار ماہ میں ہر جگہ جا کر مسجدوں میں ہر امتی کو لانے کی مشق کریں، مسجد والے اعمال کو سیکھتے ہوئے دوسروں کو محنت سیکھنے کے لیے تین چلوں کے واسطے آمادہ کریں۔

واپس اپنے مقام پر آ کر اپنی بستی کی مسجد میں ان اعمال کو زندہ کرنا ہے، ہفتہ میں دو مرتبہ گشت کے ذریعہ بستی والوں کو جمع کر کے انہی چیزوں کی طرف متوجہ کرنا اور مشق کے لیے فی گھر ایک نفر تین چلوں کے لیے باہر نکلنا ہے۔ ایک گشت اپنی مسجد کے ماحول میں اور دوسرا گشت دوسری مسجد کے ماحول میں کریں۔ ہر مسجد میں مقامی جماعت بھی بنائیں

1999 میں دعوت تعلیم، اشتہال یا مسجد کی آبادی سے متعلق شوری کا خط جس میں بھائی عبد الوہاب صاحب مولانا زبیر الحسن صاحب مولانا سعد صاحب مطلق زین العابدین صاحب اور محمد افضل صاحب کے دستخط ہیں۔

1999 میں دعوت تعلیم، اشتہال یا مسجد کی آبادی سے متعلق شوری کا خط جس میں بھائی عبد الوہاب صاحب مولانا زبیر الحسن صاحب مولانا سعد صاحب مطلق زین العابدین صاحب اور محمد افضل صاحب کے دستخط ہیں۔

سارے عالم میں دین میں ترقی کی اس مبارک و عالی حجت میں اہل اولوں کے ساتھ یکجہتی اور اجتماعی طور پر حجت کی شکل مخصوص کی حفاظت کیلئے رائیونڈ میں اجتماع نومبر 99ء کے بعد حضرت جی نور اللہ مرقہ کی مقرر فرمودہ شوری نے بعض امور پر غور کی ضرورت محسوس کی اور ان امور پر باہم غور و فکر اور ہندوپاک کے احباب کے درمیان تفصیلی گفتگو کے بعد درج ذیل باتیں طے پائیں۔

الشیخ پاک کی راہ میں یکجہتی ہوئی جماعتیں اجتماعی اور انفرادی اعمال کا اہتمام کرتے ہوئے اپنی ذات پر اور اپنے ساتھیوں پر حجت کریں۔

جس جگہ میرے قائم کریں وہاں سے نئے جماعت نکالنے کی پوری کوشش کریں۔ ہر مسجد میں مسجد ولد جماعت بنا کر فعالی پانچ اعمال کو قائم کرنے کی حجت ہو۔

جہاں مسجد دار جماعت بنی ہوئی ہے اسے ان اعمال کے پورے اہتمام پر تیار کیا جائے۔ اپنی مسجد کو شعبہ دروز اعمال سے آباد کرنے کیلئے اپنے مقام پر رہتے ہوئے اپنے مشاغل سے وقت نکالا جائے۔ دراصل حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی بیعت کی عالی نسبت کا اعتبار سے مسجد کے اعمال کو اپنے پیشاں خیال پر مقدم کرنا مطلوب ہے۔ لیکن اس کا مطلب اپنے اشتغال کو ترک کر دینا نہیں ہے۔ اس مقصد کیلئے جو بندہ پندرہ دن یا کم و بیش وقت کا مصلوب کرنے کے بجائے آدھا دن یا آدھی رات کے آٹھ گھنٹے یا ۱۲ گھنٹے یا کم و بیش وقت دے گا مصلوب کیا جائے۔ شعبہ دروز مسجد کو اعمال دعوت سے آباد کرنے کے سلسلہ میں مناسب حالات میں حسب مقام ساتھیوں کے مشورہ سے بعد فجر ایمانہ یقین و دیگر صفات صادرانہ کے لئے حجت کے بارے میں تحقیق بیان، دن میں نکر و مبشرہ کے علاوہ دو دن صائی گئے غضاہل کی تعلیم اور دیگر اعمال بھی ہونگے۔ تاہم ایسی یا دیگر کوئی بھی ترتیب حسب احوال مسجد کی جماعت مشورہ سے خود بنائے گی۔ باجماعے آئینہ والی جماعت ترغیب کیلئے مناسب ترتیب بنانے کیلئے موجود کر سکتی ہے۔

اپنے یقین کو صحیح کرنے، اعلیٰ ایمانی کیفیات پیدا کرنے اور سارے عالم کے افسانوں کو صحیح یقین پر لانے کیلئے غزوری ہے کہ ہر ساتھی روزانہ کلمہ منہم کی دعوت دے دین کی حجت کے جتنے تقاضے ہیں۔ یعنی دور و نزدیک کیلئے فی گھر ایک آدمی کو اللہ پاک کی راہ میں نکلنے سے دیکر سو فیصد آبادی کو کم از کم نماز کیلئے تیار کر کے مسجد میں لانے تک تمام تقاضے ہر ساتھی کیلئے دعوت میں اشتغال کا عنوان بنتے ہیں۔ ہر تقاضے پر لوگوں کو تیار کرنے کیلئے کلمہ منہم کی دعوت دینی ہوگی۔ مشاہدے پر سے یقین چٹانے کیلئے غزوق کی ہر شکل سے بچنے کا انکار کرنا ہوگا۔ یاد رکھنا کہ اللہ پاک کی ذات عالیہ سے ہر آدمی کو اللہ پاک کی راہ میں نکلنے کیلئے حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے طریقہ پر اور اللہ کی راہ میں جان و مال قربان کرنا واجب ہے۔ سارے دن یہ تمام اللہ کی راہ میں باہر نکل کر بھی کرنا چاہیے گا اور اپنے مقام پر اپنی مسجد کی جماعت کے ساتھ بھی کیا جائے گا۔ مقام پر جو ساتھی روزانہ وقت دے کر نکلے تیار ہو جائیں وہ آپس میں مشورہ کر کے دعوت والے اعمال میں لگیں۔ اگر کسی کو اپنے ساتھیوں کو لانے کی کوشش کی جائے۔ دین میں ہو جائیں تو گوروں میں جا کر ملاقات

کریں اور انہیں ترغیب دیکر مسجد میں آنے کے لیے تیار فرمادیں۔ اور مسجد میں جو اعمال ثلوت
 ہو رہے ہیں انہیں انہیں بشکریہ کریں۔ دعوت دینے میں چلے، چلے تیار کریں۔
 کام سمجھا کر اور ترغیب دیکر مسجد کے اعمال کیلئے تیار کروائیں۔ زیادہ سے زیادہ
 جتنا بھی وقت دین۔ گھروں میں سونہرا اعمال کی فضا بنے۔ اور بالکل نہ ماحول بنے ایسے
 ایسے ایمان و یقین کے حلقے، فضائل کی تعلیم، نماز، ذکر و تہجد کی ترغیب دیں۔ گھر کے
 ہر فرد کو دین کی راہ میں پیٹھ پر کلمہ لکھ کر دیا ہے۔ اس طرح یہ محنت اچھا بھی بنتی ہے ساتھ ساتھ
 دن بھر کی توجہ دین کی۔ دو پرانوں کیساتھ ایک نیا سا ماحول بنایا جاسکے تو ایک ماحول کے ساتھ
 جانا بہتر اور اسے ساقی کیلئے بھی دعوت کے سیکھنے کا ذریعہ بنے گا۔
 عمومی دعوت کے بجائے کوہ جمع سے اور قیامت کی تباہی کی جاتی ہے۔
 اور ایمان کی تباہی کے بجائے آپس میں ایک دوسرے کو ترغیب کیساتھ تیار کرنے میں مشغول
 کیا جائے۔
 مہجرات کا تذکرہ مستقل قرار دینے کے بجائے ایمان و یقین کی دعوت میں اسے
 شامل سمجھا جائے۔

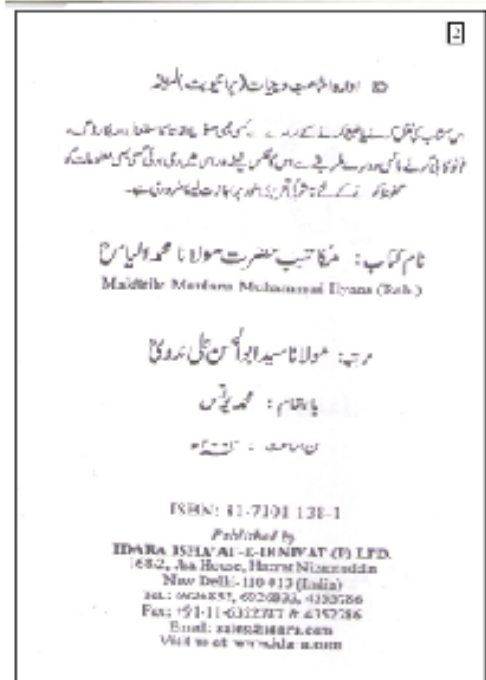
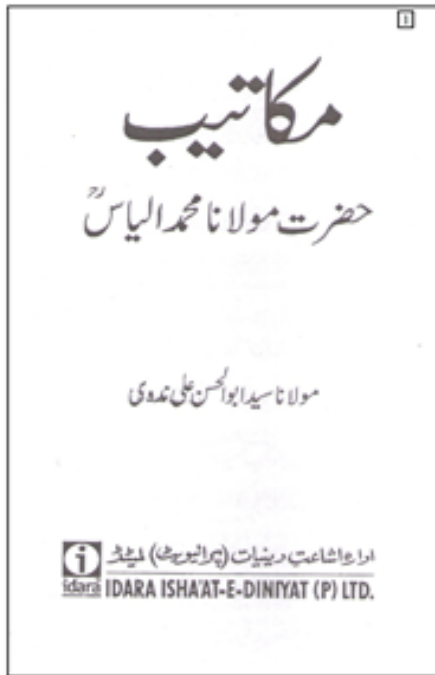
وہ احباب جو بلوچستان میں پہلی بار تین چلے یا اس کے بعد سالانہ چلے لگاتار
 ہیں بلکہ ان کے ساتھ ان کا پورا وقت تمام حرکت میں لگوا دیا جائے۔ رات بھر دس عشرہ
 کیلئے سالانہ چلے کے علاوہ آفاق کے ساتھ وقت لیا جائے۔
 مندرجہ بالا شرائط کے ساتھ بیرون ملک کے احباب کا دعوت و رابطہ نہیں
 بلکہ صرف بلوچستان میں ہی لیا جائے۔ اس سلسلہ کو کام کا جزو نہ بنایا جائے۔ اسکا فکر
 بھی ضروری ہے کہ کام کرنے والوں میں مطالبہ جماعت اور قربانی۔ کام کی سمجھ اور کام کو سیکھنے کے
 فکر میں ترقی ہو رہی ہو یعنی دیکھا جائے کہ روایت اس کام سے پیدا کرنی مطلوب ہے وہ پیدا ہوئی یا نہیں
 کسی بھی ملک کی شوری کی۔ احباب کام کیلئے کوئی مفید اور مناسب شکل ہو ہیں
 تو اس پر پہلے لاپس ہان کی شوری میں غور کریں۔ جو کہ کسی صورت نظام الدین رحمۃ اللہ علیہ
 لکھیں۔ اور اس کی نقل و کتب بھی دیں۔ حضرت جی رحمۃ اللہ علیہ کی مقرر فرمودہ شوری
 اس پر غور کر کے اس کو مناسب سمجھیں تو اس کو عملی طور پر چلا دیا جائے۔
 اسی طرح رابطہ اور نظام الدین میں بھی کسی چیز کو چلانے سے پہلے
 حضرت جی رحمۃ اللہ علیہ کی مقرر فرمودہ پوری شوری کا مہقق ہونا ضروری ہے۔

حضرت جی رحمۃ اللہ علیہ کی مقرر فرمودہ پوری شوری کا مہقق ہونا ضروری ہے۔

محمد عبد الوہاب عفی عنہ

رہائے وند۔
 سر محمدان المظفر صاحب
 سلطان ۱۲ لور ۱۹۹۹

مکاتیب مولانا इत्यास साहब रेह. जो मौलाना अलीमियां नदवी रेह. ने मुस्तब की है



حضرت مولانا الیاس صاحب بخود چاہتے تھے کہ اور کتابیں دعوت اور اپنی کتابوں کے ساتھ کتب کی تکمیل کیجائے تو بہتر ہے جس کو مولانا یوسف صاحب نے فقہیہ حدیث لکھی آپ یہ سب بیچ مولانا الیاس صاحب و مولانا یوسف صاحب کی ہی بیچ ہے اس کو مولانا سعد کی ایجاد کہہ کر امت کو گمراہ کیا جا رہا ہے مطالعہ کریں۔ مکاتیب مولانا الیاس صاحب جو مولانا علی میاں ندوی نے مرتب کی ہے۔

हज़रत मौलान इल्यास साहब रेह. खुद चाहते थे की और किताबें दावत और बाकी किताबों के साथ कुतुब की तकमील की जाये तो बेहतर हैं जिसको मौलाना यूसुफ़ साहब रेह. ने मुन्तख़ब अहादीस लिखी अब ये सब नेहज मौलान इल्यास साहब रेह. मौलाना यूसुफ़ साहब रेह. की ही नेहज है। इसको मौलाना साद की ईजाद कहकर उम्मत को गुमराह किया जा रहा है मुतालला करें।

میں عرض کرنے کے واسطے میرے ذہن میں نہیں ہی، باقی اتنا ضرور ہے کہ بندہ
ناچیز کے ذہن میں یہ نقشہ ہو کہ جس طرح انگریزی سلطنت کے فوجی فوج میں
بھرتی ہو رہے ہیں، دنیاوی معیشت کے لئے اللہ کی سنت حقیقی اعلیٰ علیہ السلام
کے لئے ان کے اس طرح مذہب کیلئے کوششوں میں لگ جانے کے ساتھ
والستہ ہے، وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ
تَحْوِيلًا فقط والسلام

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَةَ اللَّهِ فقط والسلام

بندہ محمد الیاس عفی عنہ

بقلم حبیب الرحمن مدرس، ۶ محرم بروز دوشنبہ

۱۳

فوائد مکتوب ہذا :- فل مومنین کا آپس کا حسن ظن حق تعالیٰ کے
کے جود و سخا کے دہانے کھولنے کیلئے بہترین مفتاح رحمت ہو، و تبلیغ
میں بہت وجہ سے اللہ کے تقرب نسبت یادداشت کے پیدا ہونیکے
ایسے قوی اسباب ہیں کہ ہزاروں جانیں اور سراسر اس کی قیمت میں ارزاں ہیں۔
از سبب آستانہ عزیز و احمدی
بندہ محمد الیاس عفی عنہ

بسلامت خاندان نبوت جو ہر تاباں معدن سیادت جناب صاحب دامت برکاتہم

لہ حضرت شاہ عبدالعزیز و حضرت سید احمدؒ کی طرف اشارہ ہے،

کے لئے ہوتا تو اب سینکڑوں مدارس ہوتے، اس وقت دیندار لوگوں کا اس میں کوشش نہ کرنا صاف بتلا رہا ہے کہ ہمارا دشمن فتنہ و فساد پر ابھار رہا تھا اس کو اپنی اغراض نظر نہ آئیں، لہذا اس نے چھوڑ دیا، رضوان الہی کی اتنی طلب ہی نہیں کہ خالص اس کے واسطے جان توڑ کر کوشش ہو جاوے، میرا مقصد محض الزام نہیں ہے، بلکہ ایک طرف متوجہ ہو کر اطمینان کے ساتھ ذکر کی تکثیر اور نمازیں پڑھ کر پھر از سر نو پیر زور کوشش کی ہمتیں کریں، اور ان دونوں باتوں میں پوری سعی کریں، کہ آدمی بھی کثرت نکلیں، تاکہ زمین تیار ہو اور مکاتب کی کثرت ہو، اور وہ روش زندگی کی ہو کہ ہر مسلمان کی مسجد وہاں کے بچوں کے مکتب کی صورت ہو، اپنے دشمن کی گھات سے ہوشیار رہو اور حق تعالیٰ جل جلالہ کی حصولِ رضا میں جان دیدینے کے رواج میں پوری کوشش کرو، فقط والسلام

بندہ محمد الیاس عفی عنہ، بقلم بشیر احمد

نوٹ :- اس خط کی نقلیں مختلف احباب کی طرف روانہ فرمادیں،

۷۸۶

(۱۷)

محترم حضرات میاں صاحبان دامت فیوضکم و ثبت اللہ علی
الدین اقدارکم و شرح للاسلام صدورکم،
السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ۔ میرے دوستو! اللہ تعالیٰ
تمہاری ہمتوں کو بلند فرماوے، اور تمہارے ہاتھوں ہی اپنے دین کو منصور
اور مظفر اور پائدار و آبدار اور چمکتا ہوا اور تروتازہ فرماوے، اس موضع نشی

کے جلسہ میں نہایت ضعف و سستی رہی اور آپ صاحبوں کی ہمت اور قوتوں سے جمع تو بہت بڑے بڑے لوگ ہوئے لیکن میری کوتاہ نظریں اتنی باتوں کی کمی رہی۔

۱۔ اپنے یہاں کے اصلی مقاصد کے چھٹوں نمبروں میں سے ایک بھی خاطر خواہ نہیں بیان کیا گیا، صرف اجمالاً باہر نکالنے کو کہا گیا، حالانکہ چاہئے تھا کہ اپنے تمام نمبروں کو مع اس کی اندر کی فضیلتوں اور اس کی برکات اس کے اثرات اور ان پر جننے کے ذریعہ تمام دین میں سمجھ کے پیدا ہونے اور جڑوں کے جننے اور مسلمانوں کے پہلوؤں کو سرسبز کرنے میں پوری کوشش کرنی چاہئے تھی، ہر نمبر کی الگ الگ یہ سب باتیں تفصیل دار ذہن نشین کرنے میں پوری کوشش کرنی چاہئے تھی، اور اس کے برخلاف ایک نمبر کی بھی کوئی خوبی نہیں بیان کی گئی،

۲۔ سب ذیلداروں اور سربراہانِ درہ لوگوں کو ہر موضع کے دیندار علماء اور میاں خجی لوگوں کے ساتھ الگ الگ جماعتیں کر کے ہر ایک جماعت سے الگ الگ ”ہاں“ کرانی چاہئے تھی، اور اس میں کوشش کا اصرار کرنا چاہئے تھا،

۳۔ ان سب جماعتوں سے اقرار کرانے کے بعد ہر ایک جگہ کے واسطے ان کو عمل میں مصروف کرنے کے لئے اپنے پُرانے لوگوں کو تقسیم کر کے عمل میں اور گشت میں مصروف کر دینا چاہئے تھا،

۴۔ ہر قوم کی الگ الگ جماعت بنانے کی میں بہت دین

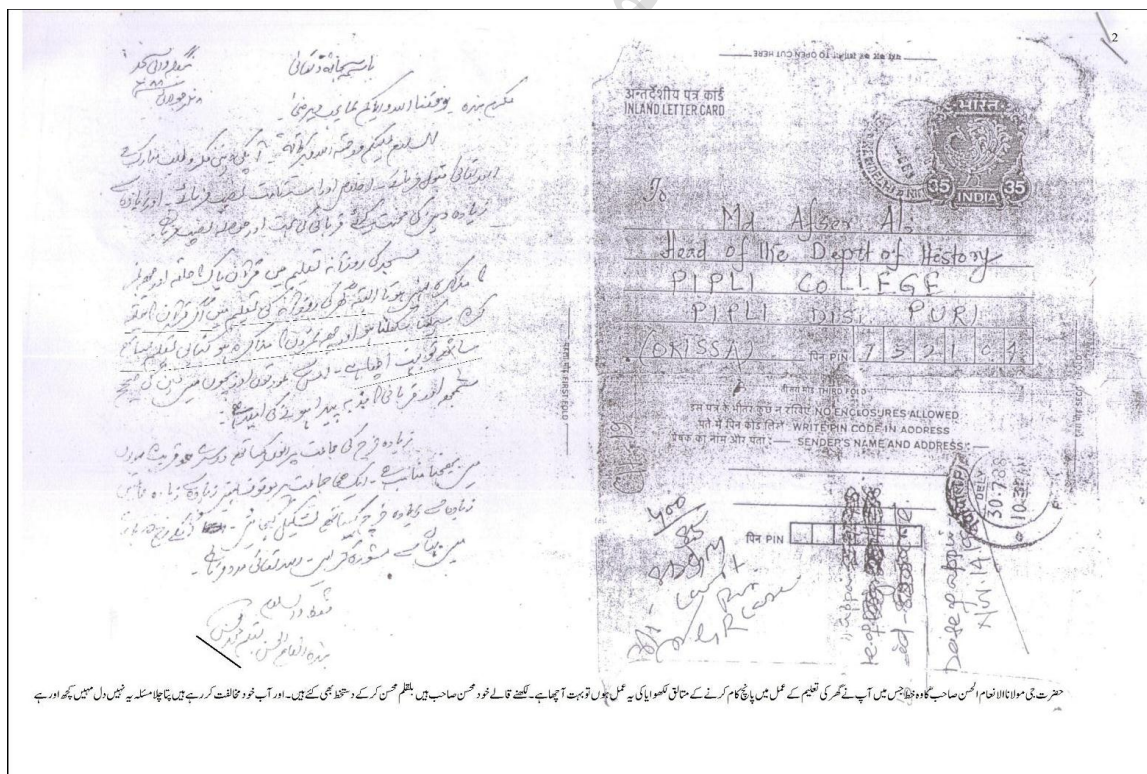
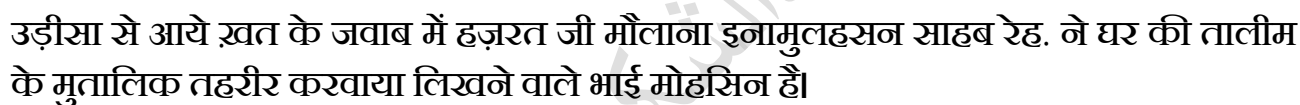
اُن کے ساتھ تبلیغ کی لائن میں قدم دھرنے والے تین طرزوں کے ساتھ بہت اشتغال رکھیں، قلیل وقت ہو مگر مداومت ہو، ازل تبلیغ کے نکلے ہوئے زمانہ میں تنہائی میں دیکھنا دیگر مجموعوں میں ان مضامین کی دعوت دینا، دیگر مجموعوں میں اور خصوصی تذکروں میں ان مضامین کا اپنے غیروں سے سننا اور وہ کتب تبلیغ یہ ہیں جو اب تک تجزیہ ہو چکی ہیں اور بہت سے مضامین ذہن میں ہیں اہل علم کے استقلال سے کھڑے ہو جانے

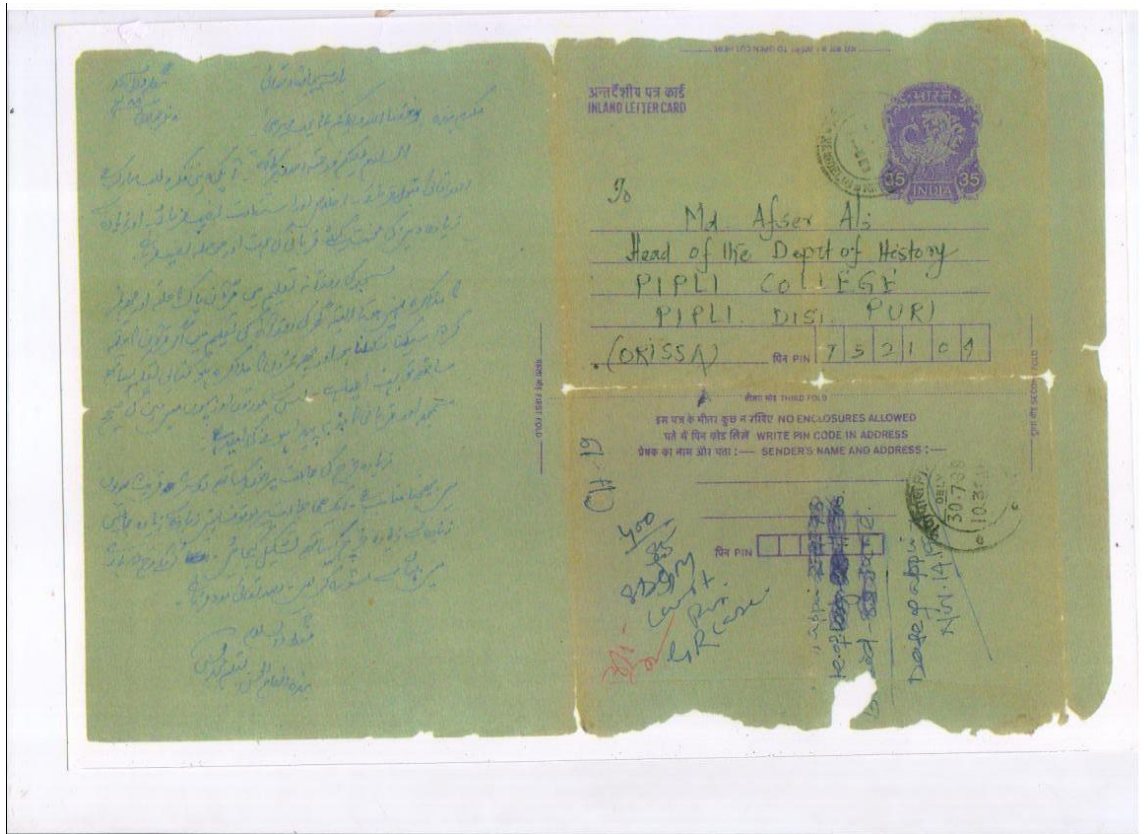
کے بعد ان مضامین میں تصانیف کا خیال ہے،

جزائر الاعمال، چہل حدیث فضائل قرآن، فضائل نماز، فضائل ذکر، حکایات صحابہ، دونوں رسائل تبلیغ مولوی احتشام و مولوی زکریا والا، اس وقت جناب کے گرامی نامہ سے جو عمومی مضمون ذہن میں آیا معلوم نہیں یہ ہر یا غیر مفید وہ خدمت میں پیش کر دیا، خصوصی ہدایات کی طرف اس وقت طبیعت متوجہ نہیں اور آپ جیسی ہائبرٹات خصوص کی محتاج بھی نہیں ان عمومی مضمون جن کی شان اخذ کرنی بہت اہم ہے، ٹوڈا بھیم سے قاضی صاحبان میں کی دس پندرہ کی جماعت تبلیغ کے لئے سہارنپور تشریف لانے کی کوشش فرمائی ہے، زیادہ تر چونکہ ملازمت پیشہ ہیں اور ریاست کا قصہ ہے اور وہ بھی ہندوستانی اور پھر وہ بھی ایک وقتی بظاہر دشوار نظر آ رہا ہے، اور اللہ کو سب آسان ہے، دعا فرمادیں کہ اللہ پورا فرمادیں،

۶ اپریل کو سہارنپور میں مدرسہ مظاہر العلوم کا سالانہ جلسہ ہے، اگر حضرات مبلغین ایسے ایسے موقعوں میں چند دنوں پہلے اور چند دنوں بعد صحیح اصول کے ساتھ تبلیغی سرگرمیوں کے موقعے ڈھونڈتے رہیں، اور اس بارہ میں ہر طرح کی تکلیف اور ناگواریوں کو برداشت کریں تو حَفَّتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَادِبِ کے وعدے کے

میں نے کچھ عارف
 کا جی میں ہے ایک اور
 الدین میں جو جو تھا تھا
 چل کر یہ ہے میرے
 سہا سہا سے وہ لانا بلو
 تھکا سے لے لی ہے
 میں اپنی حاجی محمد عارف
 میں نے سہا سے اور
 عہد الحبیب وہ محمد عارف کی
 ناریں فضل سے





میں کامل ہوتا رہے۔ آج جو اس کام کے اہل سمجھے جاتے ہیں اور علم و فہم رکھتے ہیں ان کا بھی انشراح مولانا محمد الیاس کی طرح نہیں دیکھتے، انہیں کی طرح فکر مند ہو جاتے اور یقین کرتے کہ دعوت کے بغیر دین کا کوئی شعبہ بھی صحیح نہیں چل سکتا، سب مجازی طور پر چل رہے ہیں، نااہلوں کے سایوں میں اور ماہی کی سرپرستی میں جس کو فتنہ بتلایا گیا۔ اللہ تعالیٰ کے وعدوں اور وعیدوں پر اور حضورؐ کی خبروں پر یقین کے بغیر چل رہے ہیں ورنہ چلانے والوں کے دلوں میں دنیا کی کوئی اہمیت نہیں رہتی اور صحابہ کرام کی طرح فقر و فاقہ میں چلاتے اور غیبی نظام کا نظارہ کرتے اور برکتوں اور رحمتوں کو کھلی آنکھوں دیکھتے اور اللہ کی نصرت اترتی نظر آتی ہے۔ مگر اس میں ہمارا ہی قصور ہے کہ ہم ابھی تک صحیح نمونہ نہ بن سکے اور دعوت کو نہ سمجھ سکے صرف بزرگوں کے کہنے پر قدم چل رہے ہیں اور دوسرے عوام لوگ ہماری ترغیبوں سے نکل رہے ہیں اس لئے ہم بہت کچے ہیں، پکے تو اس وقت بنیں گے جب کہ دعوت ہمیں لے کر پھرے گی اور چین و آرام نہیں کرنے دے گی اور پوری امت پر شفقت و رافت پیدا کر دے گی کہ دین کی چھوٹی سے چھوٹی چیز دنیا و مافیہا سے زیادہ قیمتی نظر آئے گی، مولانا موسیٰ صاحب کے خط کا جواب بھی یہی ہے، ہسپتال کے بستر پر پڑے پڑے لکھ رہا ہوں، بندہ کی طرف سے سلام اور دعا کی درخواست۔

فقط والسلام

سعید احمد خاں

خط (۱۴)

حضرت مولانا احمد لاٹ صاحب وغیرہ کے نام

مکرم و محترم جناب مولوی احمد لاٹ صاحب، مولوی ابراہیم صاحب، مولوی اشرف صاحب، مولوی اسماعیل صاحب، مولوی عبدالرحمن صاحب، مولانا عثمان صاحب، مولوی عثمان ثانی۔ السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

امید ہے کہ آپ حضرات کے مزاج گرامی دعوت پر چل رہے ہوں گے، کیونکہ دعوت

ای وہ رحمت والا عمل ہے جو انسان کے عمل کو بگاڑ سے سدھار کی طرف لاتا ہے۔ کبھی مزاج دنیوی رنگ میں بگڑتا ہے اور کبھی دینی رنگ میں یعنی کبھی دنیا کا لباس پہنتا ہے اور کبھی دین کا جب دین کا لباس پہنتا ہے آدمی زیادہ دھوکہ میں پڑ جاتا ہے کیونکہ مزاج سے قلوب کبھی موافقت کرتے ہیں۔ کبھی ظاہر باطن کے موافق ہوتا ہے اور کبھی باطن کے خلاف۔ اس لئے دعوت کے ذریعے ظاہر و باطن دونوں کی محنت سیکھنی ہے۔ اس میدان میں چلنے والے دشوار گزار گھاٹیوں میں سے گزرتے ہیں۔ جو گھاٹیاں مولانا محمد عمر صاحب جیسے حضرات بیان کرتے ہیں اس کی تفصیل کی فرصت نہیں۔ ان گھاٹیوں میں سے ایک گھاٹی یہ بھی آتی ہے کہ آپس کے مخالفت اور مشاجرات پیش آئیں۔ اس میں شیطان مامورین کو امیر سے بدظن کر دیتا ہے اور وہ امیر کی ڈانٹ ڈپٹ جو مامورین کے لئے اصلاح کا سبب بنتی ہے وہ عداوت کا سبب بننے لگتی ہے جس سے کام سے محرومی کے اسباب پیدا ہوتے ہیں کیونکہ امیر سے بدظنی سخت جرم ہے اور بڑا گناہ۔ وہ احادیث اٹھا کر پڑھیں جن میں امیر اطاعت کی اہمیت بتلائی گئی ہے اور یہاں تک آخری جملہ ملتا کہ کفر صریح سے پہلے پہلے اطاعت واجب رہتی ہے۔ کفر ابواحا کا جملہ حدیثوں میں موجود ہے کیونکہ امیر کی اطاعت کے بغیر اجتماعیت ناممکن ہے اور یہ امت اجتماعیت پر ہی دشمنوں پر غالب رہے گی اور جب اختلاف بڑھ جائے گا تو حق پر ہونے کے باوجود دشمن پر غالب نہیں آسکتی، اس کے شواہد حدیثوں میں اور تاریخ صحابہ میں بکثرت ملیں گے۔ نیز جو بات ہمارے لئے ضروری ہے وہ یہ ہے کہ اس کام میں ترقی اپنی تقصیرات پر نظر کرتے ہوئے طلب کو بڑھانے میں ہے، اگر تقصیرات سے نظر ہٹ گئی تو ترقی کا دروازہ بند ہونے لگتا ہے، تقصیرات پر نظر ہی تواضع کا بڑا دروازہ ہے اور جب آدمی تواضع کے قلعہ میں داخل ہوتا ہے تکبر سے محفوظ ہو جاتا ہے، وہ خدا کی رحمت کا دامن پکڑ لیتا ہے اور اللہ کی رحمت کی طرف سے ان کی حفاظت ہونے لگتی ہے۔

تیسری چیز یہ ہے کہ اپنے یقین کو مخلوق سے رضا و خوف کے اعتبار سے ہٹا کر اللہ تعالیٰ کی ذات عالی کے ساتھ وابستہ کرنا، یہاں تک کہ امیر سے بھی یقین وابستہ نہ ہو کہ یہ ہمیں آرام دیں، ہماری ضرورت کا لحاظ رکھیں، ہمارا تفقہ احوال کریں کیونکہ مخلوق کی طرف

احتیاج لے جانے سے خالق کی عطا کا دروازہ جو خاص بندوں کے لئے کھلا کرتا ہے وہ نہیں کھلے گا، وہ جی کھلتا ہے جب سب سے بے نیاز حاجتوں کو پورا کرنا سیکھنا ہے، اور جس حال میں وہ رکھے اسی حال کو اپنے لئے خیر سمجھنا ہے۔ یہ جب ہے کہ انسان اللہ تعالیٰ کی طرف چل رہا ہو، اگر مخلوق کی طرف چل رہا ہے تو اس کے لئے جو حال آئے گا اس میں شر غالب ہوگا الا یہ کہ خلاف نفس چیزوں کا ظہور ہو کہ وہ حال خیر کی طرف لانے کے لئے اور خیر کی طرف متوجہ کرنے کے لئے اور خیر کی طرف پلٹنے کے لئے پیش آتا ہے لعلہم یرجعون کی آیت کو پڑھیں۔

چوتھی بات یہ ہے کہ شیطان دین کی کل محنت سے ہٹا کر جزوی محنت کی طرف لاتا ہے اور فرائض سے ہٹا کر نوافل کی طرف لاتا ہے اور کیفیت وہ طاری ہوتی ہے جتنی اس کو فرائض میں نہیں آتی اس لئے اس کا اہتمام فرائض سے زیادہ نوافل پر ہو جاتا ہے جس کی وجہ سے عام امت سے اپنے کو وہ علیحدہ کر دیتا ہے۔ نہ امت کو لے کر چل سکتا ہے نہ امت کے ساتھ چل سکتا ہے اور اس کو رہبانیت چھٹ جانے والی صفت پر لے آتا ہے تاکہ یہ امت میں دین پیدا نہ کر سکے اور امت اس کے ہاتھ سے پھر شیطان اس امت کی نگاہ میں اس کی حیثیت گھٹا دیتا ہے اور امت اس کی طرف رجوع نہیں کرتی بلکہ اس سے بچنے ہی کو اپنی کامیابی سمجھتی ہے۔ اس لئے آؤ دعا فرمائیں کہ اللہ تعالیٰ اس کام کی عظمت کے ساتھ چلنے والا بنائے۔

فقط والسلام

سعید احمد خاں

بقلم احمد مہتوی، ۵/ رمضان المبارک ۱۳۹۶ھ

एक सवाल अपने को पुराना कहने वाले चंद अहबाब से

DATE / /

مولانا ابراہیم صاحب: ایک سوال؟

حضرت مولانا ابوالکاسم صاحب: علیہ الرحمہ امیر ۱۹۴۴ تک

↓

حضرت مولانا یوسف صاحب: علیہ الرحمہ امیر ۱۹۶۵ تک

↓

حضرت مولانا انعام الحسن صاحب: علیہ الرحمہ امیر ۱۹۹۵ تک

↓

حضرت انعام صاحب: نے دکن اصحاب کی سوری بنائی ایک فیصلہ مقرر کرنے کو لیکن اتفاق نہ ہوئے کی صورت میں بن فیصلہ ہوئے

↓

① مولانا اطہار الحسن صاحب: علیہ الرحمہ ② مولانا زبیر الحسن صاحب: علیہ الرحمہ ③ مولانا سعد صاحب: دانت بکاتہ
بن نے فیصلہ کیا ۱۹۹۶ تک

↓

مولانا زبیر الحسن صاحب: اور مولانا سعد صاحب: ۲۰۱۴ تک

↓

اب موجودہ مولانا سعد صاحب: میں طے شدہ فیصلہ اور ذمہ دار

اب ان حالات میں ہم کسی اطاعت کریں آپ کی، مولانا احمد صاحب: کی مولانا یا چند لوگوں کی جو نظام الدین کو چھوڑ کر مختلف جگہ جمع ہوئے ہیں۔

جیلر ہم نے یہ پڑھا اور آپ حضرات سے سننا سیکھ ایسے امیر اور ذمہ دار کی اطاعت کر جو جیلر کے کفر کا حکم نہ کرے (ماخوذ بیان حضرت مولانا یوسف صاحب:)

اور حضرت مولانا سعد صاحب: نے جو کفر کا حکم دیا ہے اس کی وضاحت فرمائی؟

جزاک اللہ خیراً

لغزہ

مولانا الیاس صاحب سے لیکر آج تک نظام الدین میں امیر / فیصل / ذمہ دار کی ترتیب

مولانا ایتھاس سادھب رھ. سہ لیکر آجاتک نیجاموڈین مین امیر/ فیسل / جیمیدار کی
ترتیب

अहले गुजरात व दिगर बनाम अपने आप को पूराना केहने वाले चन्द पूरानो से सवाल

- (1) हज़रत मौलाना मुहम्मद ईल्य़ास साहब रहमतुल्लाह अलैहि अमीर 1944 तक
- (2) हज़रत मौलाना मुहम्मद युसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि अमीर 1965 तक
- (3) हज़रत मौलाना इनआमुल हसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि अमीर 1994 तक
- (4) हज़रत मौलाना इनआमुल हसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने दस अहबाब कि शूरा बनाई एक अमीर मुक़र्रर करने के लिये लेकिन इत्तेफ़ाक़ न हो ने कि सूरत में तीन फ़ेसल हुए।
- (5) यह .1. तीन हज़रत मौलाना ईज़हारूल हसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि .2. हज़रत मौलाना जुबैरूल हसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि .3. हज़रत मौलाना सअद साहब दामत बरकातुहुम इन तीन ने फ़ेसला किया 1997 तक,
- (6) हज़रत मौलाना जुबैरूल हसन साहब रहमतुल्लाह अलैहि व हज़रत मौलाना सअद साहब दामत बरकातुहुम इन दो ने फ़ेसला किया 2014 तक,
- (7) अब मौजूदा हज़रत मौलाना सअद साहब दामत बरकातुहुम हैं तैय शुदा फ़ेसल व ज़िम्मेदार।

अब इन हालात में हम किसकी इताअत करें आप की मौलाना अहमद लाट साहब की या मौलाना याकुब साहब कि या चन्द लोगों कि जो मर्कज़ निज़ामुद्दीन को छोड़ कर मुख़्तलिफ़ जगह जमआ होते हैं। जब के हमने यह पढ़ा है और आप हज़रात से सूना है के ऐसे अमीर और ज़िम्मेदार कि इताअत करो जब तक के कूफ़ का हुक्म ना करे (मआखूज़ बयान हज़रत मौलाना युसुफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि) और हज़रत मौलाना सअद साहब दामत बरकातुहुम ने जो कूफ़ का हुक्म दिया है ? उस कि वज़ाहत फरमाएँ। जज़ाकुमुल्लाह ख़ैर